पीढ़ी-दर-पीढ़ी

हरियाणवी कथा संग्रह

लेखकः पवन सौंटी

पीढ़ी–दर–पीढ़ी

हरियाणवी कथा संग्रह

लेखकः पवन सोंटी

पीढ़ी–दर–पीढ़ी

हरियाणवी कथा संग्रह

लेखकः पवन सोंटी (पवन कुमार)

प्रकाशकः स्व–प्रकाशित
प्रकाशन स्थल का पताः
पवन सोंटी, गाँव सोंटी, डाकखानाः लाडवा,
जिला कुरुक्षेत्र (हरियाणा), पिन कोडः 136132
दूरभाष संपर्कः 9416191900
email% pawansonti@gmail.com

संस्करणः प्रथम (2023)

मूल्यः 150 रुपए

ISBN: 978-93-5457-870-0

आत्म–कथन

प्रस्तुत पुस्तक के लेखन में मुझे 7 साल का काफी लम्बा समय लगा। इस पुस्तक की नींव कुरूक्षेत्र विश्वविद्यालय के युवा एंव सांस्कृतिक विभाग में 2011 में विभाग के तत्कालीन निदेशक परम आदरणीय श्री अनूप लाठर जी की प्रेरणा से उसी समय रखी गई थी, जब उन्होंने मुझे यह कहते हुए हरियाणवी में साहित्य लेखन हेतू प्रेरित किया था, कि हरियाणवी में साहित्य लेखन बहुत कम हुआ है। उसके बाद 2013 में हरिभूमि समाचार पत्र के सम्पादक श्री ओमकार चौधरी जी ने भी मेरी इन कहानियों को लेकर किताब लिखने के लिये मुझे काफी प्रेरित किया।

एक दशक से भी लम्बे समय के बाद अगर अब यह पुस्तक प्रकाशित हो रही है तो इसके पीछे मेरे प्रेरणास्रोत हैं दिल्ली विश्वविद्यालय के कुलपति आदरणीय प्रोफेसर योगेश सिंह जी, जिनके उत्साहवर्धन से मेरे लेखन को धार मिलती है। पुस्तक लेखन हेतू कथावस्तु चयन में जाट धर्मशाला, कुरूक्षेत्र के प्रबंधक चौ. भल्ले सिंह जी ने भी मेरा बहुत सहयोग किया।

इस प्रेरणा एवं सहयोग के लिये मैं उपरोक्त सभी आदरणीय महानुभावों सहित अपने परिवार का भी आभार प्रकट करता हूँ, जिनके बहुमूल्य विचारों और सहयोग से यह पुस्तक आपके हाथों तक पहुंची। यह पुस्तक समर्पित है मेरे प्रेरणा स्रोत ऊर्जापुंज पिता स्वर्गीय चौधरी हरिचंद पूनीया जी को।

पवन सोंटी

पीढ़ी–दर–पीढ़ी कोई एक विषय को लेकर लिखा गया उपन्यांस नहीं अपितु यह विभिन्न विषय–वस्तुओं को लेकर हरियाणवी में लिखी गई 10 अलग–अलग कहानियों का एक संग्रह है। ये सभी कहानियां बेशक आपस में तालमेल न रखती हों, लेकिन समकालीन सामाजिक परिस्थितियों का समान रूप के प्रतिनिधित्व कमोबेश जरूर करती हैं।

कोई भी साहित्यकार लेखन के समय परिस्थितियों से प्रभ. ावित जरूर होता है और उसके लेखन में कहीं न कहीं तत्कालीन अथवा लोक प्रचल्लित कुछ वास्तविक घटनाओं से समानता भी हो सकती है। यह कोई वास्तविक घटनाओं पर आधारित कथा संग्रह नहीं हैं। पाठक कृप्या इसे मनोरंजन के तरीके से ही लें।

लेखक

अनुक्रमः

पीढ़ी–दर–पीढ़ी

रामजस की तीसरी पीढ़ी आज फेर साहूकार की बही मैं गूंठा लाण चाल पड़ी सै। रामजस तै लेकै उसके पोते जोरे तक जे कुछ फर्क़ आया सै तो वो बस यूहे था अक इब गूंठे गेल अंगळी बी चालण लागगी। जड़ै रामजस अर उसका छोरा गूंठा लाया करदे ओड़ै इब उसका पोता कलम के डांकळे खींच्चण लाग गया। इन तीन पीढ़ियां मैं जे होर कुछ फर्क नजर आया तो वो यू बी था अक इब दादा के टेम का सैंकड़्यां का कर्ज लाक्खां की सूई पै जा लिया था। पिछले साठ बरस मैं दुनिया कै कोठियां, अटारियां अर कारां तक होगी पर रामजस का घर आज बी उसा–ए सै। साहूकार, बकील, डाक्टर अर खार–दवाई आळ्यां के घर चलाण आळे उस धरतीपुत्र का घर ज्यूं का त्यूं सै। ना करजा उसपै पाट्या, ना उसके पूत रामचंद्र पै अर इब वाहे हाल उसके पोते जोरावर का नजर आवै सै।

तीन पीढ़ी का गवाह टूट्टी कड़ियां आळा बिन लिप्पया दो कमर्यां का कोठड़ा, घेर मैं धूएं तै काळी होई एक बैठक, कच्ची खुरळी पै बंधे तीन खोले अर दो कटड़ू। उन डांगरां की हालत बी इसी हो रही सै जणूं कल तक हाड्डा–रोड़ी मैं जरूर पौंहच लेंगे। घेर के बरांड्डे मैं खूंटियां पै टंगी रामजस के राज की टूट्टी पंजाळी अर जर खाए फाळे आळा पुराणा सा एक हळ, याद करवाण नै काफी सै इस किसान परिवार की दुख भरी कहाणी नै।

बैठक के बारणे धोरै कूणे मैं कांध पै जमी राख की काळस याद दिलवावै सै अक कदे उरै रामजस दादा के होक्के खातर गोहा दब्या करदा होगा। घरां नै चाल कै होर बी कड़वी सच्चाई आँख खोलण नै त्यार सै। सण के पूंज्यां बरगे सूखे धौळे बालां आळी रामचंद्र की विधवा खाट पै इसी पड़ी सै जणों टूट्टे खटोल्ले के बाणां मैं को इब–ए तळै नै लिकड़ैगी। कच्ची रसोई तै उठदा गोस्सयां का धुम्मा इस घर नै किसे शमशान जिसा बणाण मैं होर भी सहयोग कर रह्या सै।

कुछ महीने पहल्यां तक इस बुड़िया धोरे इसकी एक बेट्टी बी थी जिसका ब्याह इसे फागण मैं निपटाया सै। उसतै पाच्छै इसका बुढ़ापा गिणे दिनां मैं साहूकार के ब्याज तै बी ज्यादा तेजी तै बढ़रह्या सै।

हालांके बाप के जींदे जी जोरा चार जमात तक पढाई बी करग्या था। उसकी इच्छा तो दस करकै नौकरी करण की थी पर बाप की मौत नै उसका यू सुपना बी नींद मै–ए तोड दिया था। छोटे किसान की दुर्दशा नै जोरे तांई भरी जवानी मैं बुड्डा कर दिया। कुछ नवां करण की बजाए जोरा तो बाप के टेम की आई–चलाई नै संभालण मैं–ए टूट लिया था।

दो बळ्दां की खेती किराऐ के ट्रैक्टरां मैं बदलगी थी। जो थोडी बोहत बचत होंदी वा ट्रैक्टर आळे के भाड़े मैं चाल्ली जांदी। माली हालत कमजोर होण करकै किसे रिश्तेदार नै जोरे का ब्याह तक करवाण का बी ब्यौंत नहीं करया, जदके आच्छे खुड्डां आळ्यां के नशेडी छोरयां तक के ब्याह हो लिये थे। उपर तै बाहण के ब्याह नै जोरे तांई होर बी तोड़कै धर दिया था। एक ओढ तै साहुकार का कर्ज अर दूसरी ओढ भविष्य मैं अंधेरा देखदे होए जोरा घणा दुखी रहण लागग्या। बाप दादे के टेम तै चली आ रही साहुकार की कर्जदारी जोरे नै किसे गुलामी तै कम नजर नहीं आवै थी। फेर बी वो बख्त का मार्या सारा दिन आपणे खेतां मैं माट्टी गेलां माट्टी होया रह्ंदा। जद बी खाली टेम मिलदा तै पुरख्यां के टेम तै चली आ रही इस अंतहीन कहाणी नै लेकै सोचदा अर जुगाड़ लांदा के किस तरियां इसका अंत हो सकै है।

भगवान की करणी देखो के इब दशकां तै चली आ रही इस अंतहीन कहाणी नै अंत मिलग्या। इस बार भगवान ने कती तोड़ काढ़ दिया। धान के मौसम में बिन बरसात के खेत सूखे रह गए। जो दाणे होए उनका भाव ठीक कोन्या मिल्या। इस पाच्छै गेहूं की फसल नै कती चाळा पाड़ दिया। जद तै गेहूं की बिजाई करी थी उसे टेम तै भगवान जोरे तै कती रूठ ग्या। खार–दवाई गेर कै

सारा खर्च पूरा हो लिया था अक बेमौसमी बरसात शुरु होगी। गिर पड़ कै जद पेड्डे दाणे लेण नै होए तो ओळे पड़गे। सरकार नै तुरंत गिरदावरी का ऐलान कर दिया। जोरे नै कुछ सांस सा आया। इबे गिरदावरी होकै निपटी-ए थी अक गिरी पड़ी फसल मैं दांती फिरते ही फेर आंधी अर बारिश नै जोरे के रहे सहे अरमान भी मेट दिये।

सोमवार नै तड़कै खेत कान्हीं घूम कै अपनी बरबादी देख कै आया-ए था अक बैरी मोबाईल टैलीफोन बाजग्या। फोन किसे रिश्तेदार का कोनी बल्कि साहूकार के छोरे का था। छोरे ने पड़दे ही जोरे तै बूझ लिया अक फसल क्यूं नी आई इब तक। जोरे की रोणी फूट पड़ी। वो बोल्या अक बाबूजी इबकै तो लगै खाण के दाणे अर ढांगरां खातर तूड़ी तक भी मोल लेणी पड़ैगी। कल की बारिश नै तो कती मळियामेट कर दिया सै।

साहूकार का छौरा तैश मैं आकै बोल्या, "पिछली छमाही मैं बी तनै ब्याज तक नीं घटाया था, अर इब तू कहै सै अक दाणा कोनी आंदा। सुण भाई, म्हारे घरां नोटां की फैक्ट्री कोनी लागरी। इसे फागण मैं तो तू अपनी बाहण के ब्याह खातर पांच लाख रूपये चला बैठ्या, अर पिछला बकाया जस का तस खड्या सै। इब न्यूं काम कोनी चालै। मेरे अर तेरे बाबू आळा जमाना इब जा लिया सै। आज मंडी मैं दुकान पै आ जाईये अर अपणी जमीन का ब्याना लिखवा जाईये। कल कल्हाण तेरै कुछ होग्या तो म्हारे पिस्से कौण देवैगा?"

इन बातां नै सुणदे-सुणदे जोरा घेर मैं चाल्या गया। फोन पै इबे साहूकार के छोरे का संदेश चाल-ए रह्या था अक जोरे की खोपड़ी घूमगी। 27 साल के उस नौजवान के दिमाग नै खेतां अर घर तै बाहर लिकडकै़ सोचणा शुरु कर दिया। जोरावर नै फोन बिना काट्टे गोझ मैं घाल लिया अर बैठक के पाट भेड़ कै टूट्टे होये लकड़ी के पाट्टां आळी अलमारी मैं कुछ खंगालण लाग ग्या।

****

घरां जोरे की मां उसकी बाट देख रही थी अक कद खेत तै आवैगा अर तडके़ की चाह अर टिकड़ा खावैगा। बाट देखदे–देखदे दोपहर होण नै होली पर जोरा घरां कोनी आया। बाट देखदी मां के सब्र का बांध टूटग्या अर वा जोरे नै देखण खेत मैं चाली गई। उड़े तै उसके देवर नै बताया अक जोरा तो तडकै़–ए खेत का गेड़ा देकै घरां कान्ही चाल्या गया था। मां का काळजा धक–धक करण लागग्या अर भाजदी होई घरां आकै घेर मैं गई। बैठक के किवाड़ भिड़ रहे थे। उसनै धक्का दिया तो फटाक तै किवाड़ खुलगे अर उसकी चीख लिकड़गी। बैठक मैं टूटे खटोले पै जोरा औंधे मूंह आधा उपर अर आधा तळै पड़्या था। जोरे के मुंह तै झाग लिकड़रे थे। मां नै तुरंत उसतीं उठाण की कोशिश करी पर जोरा तो कती माट्टी बण लिया था। खाट धोरै गेहूं मैं घास नै मारण आळी दवाई का डब्बा पड़्या था।

जोरे की मां दुहाथड़ मार कै रोण लागी अर खाट पै पड़े अपने लाल की कोल्ली भर ली। बेटे की माट्टी तै लिपटकै मां देर तक रोंदी रही, फेर कड़ी जाकै पड़ौस की लुगाईयां ने उसकी आवाज सुणी अर भाज कै ओड़ै आई। उस प्रलयकारी हाल नै देखकै एक दो लुगाई तो बेहोश–ए होगी। एक दो नै हौंसला कर कै अपणे माणसां तक बात पहुंचाई अर जोरे की माट्टी नै संभालण का सिलसिला चालग्या।

लोग कट्ठे होगे अर लाकड़ी– डिंगरी जुटाकै जोरे के अंतिम संस्कार की तैयारी करली। एक दो पढ़े लिक्खे छोरयाँ नै जे पोस्टमार्टम की बात करी तै बुड्ढे भडक़गे। बोल्ले जे यू सांग होग्या तो पुलिस आवैगी अर बेरा ना किस–किस नै लपेटैगी। इसकी तो लाश मैं बी सड़ांध होजैगी कल तक। चाल्लो इस टेम तै इसने दाह मैं दे दयां। आखर और कोण से इसके आगे पाच्छै ?

जोरे की मां गस खा–खा कै कहंदी रहगी अक मेरी बेट्टी नै तो बुला लेते। किसे नै एक ना सुणी अर जोरे की लाश नै छळ्यां मैं ठा लेगे। अगले दिन मामे, बुआ–फूफ्फे अर बेबे–बहणोई भी आगे। तीसरे दिन राख बटळी करकै रिश्तेदार चाल्ले गए। घरां मां–बेटी रहगी मिलकै दुख रोण नै।

तेहरमी तक अगड़–पड़ौसणां बी बेठण आंदी रही, उसके पाच्छै सब सूना होग्या। साहूकार का हाथ बी मोकळा होग्या अर जोरे नै इसा फंद काट दिया जिसतै एक परिवार की पीढियां की गुलामी एक झटके मैं–ए खत्म होगी। वा जमीन जिसके बिकण तै डरकै जोरे नै अपणी जिंदगी बी खत्म कर ली, वाहे जमीन इब लोगां जोगी होकै रहगी। उसके असल मालक उसकी कमाई तै कदे सुख की रोटी ना खा सके पर इब इस जमीन नै किसे होर घर का कर्ज उतारकै उड़ै रौणक जरूर ल्यादी होगी।

****
****

मुड़ आया बड़ का पंछी

गाम के बीच मैं खड़्या वो बड़ का दरख़्त अपने आप मैं एक इतिहास था। गाम बसण तै पैहल्यां, अर आज तक बेरा ना कितनी दुनिया नै अपणी छां मैं आराम करवा चुक्या होगा, अर कितने लाख पंच्छियां का बसेरा रह्या होगा वो दरख़्त?

गाम के अगले पिछले हर राज के राजदार उस बड़ की मौत का इंतजार पिछले तीन दिनां तै सारा गाम कर रह्या था। इस चौमासे मैं हुई लगातार बरसात अर आंधी नै वो ऐसा हिलाया के गिरणा शुरु होग्या। आखर पीढियां का यू गवाह कोई तुणका तो था नीं के एक दम गिर जांदा। तीन दिन तक लगातार उसका गिरणा जारी रह्या अर चौथे दिन का सूरज लिकड़दे सार ही सब गाम आळ्यां नै देख्या के कुएं आळे उस बड़ की जड़ां हवा मैं अर टाहणे धरती पै आ चुके थे।

पंचायत नै अपणा फर्ज निभाया...., ठेकेदार बुलाए गए..., बोली करी अर टुकड़े-टुकड़े कर कै वो इतिहास ठेल्यां मैं लद कै आरे पै चाल्या गया। अपणे पाछै गाम के बीच मैं छोड़ गया एक सून्नापण। उसके बिना जणूं पंच्छियां का चहकणा रुकग्या..., बेवारसे डांगरां की छत्रछाया जांदी रही...., बाळकां का लुक-छपाई का खेलणा जांदा रह्या, अधेड़ अर बुड्ढे लोगां का दोपहर मैं ओड़ै तांस बजाण का ठिकाणा छुटग्या।

छः महीने पाछै उसे चौंक मैं आ कै रुकी एक लाम्बी कार। बाळकां मैं हल्ला माच ग्या अक कोई बड़ा आदमी गाम मैं आया सै। कार के पाछै धूल फांकते भागे आए बाळक कार कै उरै-परै हाथ लाकै खुश हो रहे थे अक उन्हें औड बड़ी कार नै छेड़ण का मौका हाथ लाग ग्या...। कार मैं तै धौले कपड़्यां आळा एक बुजुर्ग उतर्या। हाथ मैं खुंडी, आंखां पै चश्मा, कानां तक चड़ी मूछ अर चूंच आळी जूतियां....। समझ मैं तो कोनी आया अक यू कौण सै,

अर उरै क्यूं आया सै पर उस रौबदार बुड्ढे नै देख कै वैं घबरा कै कार तै दूर जरूर हो लिये। वो बुजुर्ग आपणी खूण्डी तै बड़ की जड़ां की धरती नै करेळदा होया उरै-परै नै लखाण लाग्या। जद उसनै ओड़ै कोई नजर ना आया तो ओठै-ए गोड्डी ढाह कै बैठ ग्या....।

इतने मैं धोरै की बैठक तै एक बुजुर्ग बाहर आया अर उसनै देखण लाग्या। अजनबी बुड्ढा भी उठ्या अर दोनुआं नै एक दूसरे कान्ही पछाणन आळी निगाह तै लखाया।

कार आळे बुड्ढे नै पीळी मूछ अर पाट्टी धोती आळे उस बुड्ढे ताईं अपणी बाहां मैं भर कै कह्या, ''रै नरसी! पछाण्या नी के? तेरा यार सूं कैप्टन राम सिंह।'' नरसी नै भी कैप्टन ताईं पछाण लिया अर उसनै पकड़ कै अपणी बैठक मैं लेग्या। अपणे गौंच्छे तै खाट झाड़ कै कैप्टन बिठाया अर अपणे पोते ताईं आवाज़ मार कै चाह का भी हुकम दे दिया।

नरसी नै बुझया, ''अरै कैप्टन! भाई घणे साल पाछै गाम की याद आई रै! जे साल-दो साल होर ना आंदा तो हम तै चाल्ले गऐ होंदे भाई इस दुनिया तै। तनै फेर कौण पिछाणदा भाई।''

कैप्टन नरसी के पैरां पै गिर कै रोण लाग्या, ''भाई नरसी, माफ करियो, पहल्यां नौकरी अर फेर शहर की हवा नै मेरा तै दिमाग कती-ए खराब कर दिया था। इब मेरा दिमाग ठिकाणे पै आया अर मनै एहसास होया के अपणे फेर अपणे होवैं सै। अपणी मां वाहे माट्टी होवै सै जड़ै जन्म लिया हो।

पूरी जिंदगी मैं तो गफ़लत मैं-ए रह्या भाई। भगवान की दया तै मिली नौकरी, पद अर परिवार सब नै मिल कै मेरा दिमाग आसमान पै चढ़ा दिया था। आज बी वो सब बिखरग्या तो फेर बाप जिसे उस बड़ के दरख़्त अर थारे जिसे भाईयां की छांह मैं आया था पर वो बाप जिसा बड़ भी कोनी बच्या भाई।''

इतना कहंदे–ए कैप्टर फूट–फूट कै रोण लाग्या। नरसी पै रुक्या कोनी गया अर कैप्टन नै झिंझोड़ कै पूछण लाग्या, ''अरै इसा के जुल्म होग्या जो यू मेरा शेर सा भाई न्यूं रोया रै?'' यार के इस प्यार नै कैप्टन के भित्तरले मैं खोद सी मारी अर उसके दिल का दर्द फूट पड़्या।

****

गाम मैं तै फौज मैं भर्ती हो कै गए उस राम सिंह गाबरू गेल उसकी लुगाई भी गई थी। बखत नै साथ दिया अर टेम के साथ तरक्की भी मिलदी गई। पद बड़्दे गए अर राम सिंह की गफ़लत भी बड़्दी गई। भगवान की दया तै तीन फूल सी बेटियां भी घर में आगी।

हंसी–खुशी तै चहकदा परिवार पता नी कितने बरस खिल्या रह्या। इसे बीच कैप्टन नै बड़े शहर मैं एक कोठी बी बणा ली। कदे साल–छः महीने मैं उड़ै गेड़ा मारदा, नहीं तै अपणी नौकरी मैं–ए मस्त रैंह्दा। छोरियां पढ़्दी होई कॉलेज तक पहौंचगी। बखत नै इसा गेड़ा दिया अक एक–एक कर कै उन तीनों छोरियां नै अपणी मर्जी तै वर तलाश लिये। हालत तै समझौता करकै कैप्टन राम सिंह नै बी बारी–बारी तै छोरियां के हाथ उनकी इच्छा अनुसार पीळे कर दिये।

कह्या करैं सै अक जद माड़ा बखत आवै तो उंट पै बैठे माणस नै बी कुत्ता काट लिया करै सै। कैप्टन गेल्यां बी इसी–ए बणगी। घर आळी नै कैंसर जिसी कसूती बिमारी लागगी। रिटायर होण पाछै जिन सुख के दिनां खातर शहर मैं घर बणाया था वो बिमारी के दुखां मैं बिकग्या। छोरियां नै बी जद बाप धोरै कुछ नजर ना आया तो वैं बी किनारा करगी। बखत की मार मैं मरदे कैप्टन पै रहगी एक लाम्बी कार अर उस मैं ढोण नै बिमार बुड्डी लुगाई। आखर मैं जीवन भर साथ देण के बचन भरण आळी वा भागवान बी राम नै प्यारी होगी। इसे दुख झेलदे कैप्टन नै तेरहवीं तक तो उधार की मांग कै राक्खी आपणी बिकी होई उस कोठी मैं टेम कट्या अर फेर

अपणे पुरख्यां के गाम की उस माट्टी की याद आण लागी जड़ै जन्म लेकै सुख का बचपन गुजार्या था। दुख के पहाड़ तळै दबे कैप्टन नै अपणे दुखां का सीरी बणन नै वाहे गाम के बीच आळा बड़ का दरख़्त याद आग्या अर गाम कान्हीं रूख कर लिया। वाहे माड़े बखत आळी बात उरै बी नजर आई। जिस बड़ ताईं अपणे दुख सुणाण चाल्या था आज वो भी उसकी बाट देख कै कूच कर ग्या था। उस बचपन के यार बड़ की छांह का आसरा बी दगा देग्या।

****

कैप्टन की सारी दुख भरी कहाणी सुण कै नरसी भी फूट–फूट कै रो पड्या। बोल्या, ''कोनी भाई राम सिंह दुनिया कोनी रुकदी रै! जिंदगी तो पूरी करणी–ए सै। तू उरै मेरे धोरै–ए रहैगा इब। तेरा गाम आळा पुराणा मकान टूट बेशक गया हो पर तनै सांभण नै आज भी तैयार सै। हम सब मिल कै उसनै ठीक करांगे अर तनै सिर आंख्यां पै राक्खांगे भाई।''

कैप्टन रोंदे होऐ बोल्या ''वा बड़ तो कोनी रह्या पर उसकी जगां तो आज बी कायम सै। जे गाम मनै इजाजत देदे तो मैं उसे जगां पै फेर एक बड़ का पौधा लगाणा चाहूं सूं, जो फेर उसे तरियां बड़ा दरख़्त बणैगा अर उसकी छांह मैं अगली पीढियां बेठ कै शायद हमनै याद तो जरूर कर्या करैंगी।''

आज फेर उसे चौंक मैं एक बड़ का पौधा इतिहास बणाण आळा दरख़्त बणन लागरह्या सै। उसके धोरै चबूतरा अर दो तख़्त कैप्टन नै बणवा दिये। शुरू मैं दिन की धूप मैं तो वो छां कोनी देवै था पर सांझ नैं अर तडकै़ फेर वाहे ताश की महफिल ओड़ै जमण लागगी। पांच बरस मैं वा पौधा एक खाट की छांह देण जोग्गा हो लिया। कैप्टन दोपहरी मैं बी उसे छांह का सहारा लेण की कोशिश करदा।

एक दिन दोपहर ढळे पाछै ताश खेलणिये आए अर खाट पै लेटे कैप्टन नै जगाण लागे अक ताऊ उठ आजा पत्ते खेलांगे। पर खाट पै तो बेजान माट्टी पड़ी थी। पूरे गाम नै कैप्टन के मरे का घणा शोक मनाया अर अपणा बुजुर्ग मान कै उसका अंतिम संस्कार कर्या। उसकी याद मैं उसे बड़ तळै एक पत्थर ला दिया ताके आण आळी पीढ़ियां अपणे बड्यां तै इस कहाणी नै बूझदी रहैं अर अपणी माट्टी के लाल तै शिक्ष्या लेंदी रहैं के कदे आदमी नै अपणी जड़ां तै ना टूटणा चाहिये।

****
****

वा पागल कोनी थी

''म्हारी जात तो एक थी पर गोत तो एक कोन्या था, धर्म एक था पर गाम तो एक कोन्या था, रिश्ता बी जो घर आळ्यां नै कर दिया वाहे मंजूर कर्या...। फेर कुणसा कसूर होग्या अक दुनिया नै म्हारे पापड़ पाड़न मैं कसर ना राक्खी। जिसकी आस तै दो बरस का बाळ्क मेरी गोद मैं था, मेरे ताईं उसी मेरे घर आळे कै पौंहची बंधवा दी। इब यू दिप्पू अपणे बाबू नै मामा क्यूकर कह्वैगा? उसके स्कूल मैं बाबू की जग्हां पै किसका नाम लिखवाया जावैगा...?''

बिमला सडक़ किनारै पुराणे कुएं की मण पै बेठी अपणे आप तै कुछ न्यूं-ए बात कर री थी। उसके बाळ सण के उळझे होए पूंज्जयां जिसे हो रहे थे। सिर पै लत्ता ना अर पायां मैं जूत्ती कोन्या। कपड़्यां मैं बुरी तरियां चीक्कट जम रह्या था।

उसका हूलिया चाहे जिसा बी हो पर वा पागल कोनी थी। समाज के ठेकेदारां नै उसतीं पागल बणा दिया था। इब नौबत या सै अक 15 दिन तै वा इस कुएं धोरै न्यू-ए घूमती दिखै सै। जे किते चार पग्गड़धारी आंदे दिखजैं तो वा घबरा कै न्यू बड़बड़ांदी होई कुएं धोरै बणी बूड्डे बाबे की कुटिया मैं लुक जांदी, ''पंचाती आ लिये...... पंचाती आ लिये......।''

चार बरस पैहल्यां बिमला का रिश्ता उसके मामा नै अपणी दूर की रिश्तेदारी मैं करवाया था। सगाई होई, रिश्ते तै एक बरस पाच्छै ब्याह की तारीख बी तय होगी। चिट्ठी गई अर ब्याह का दिन बी आण पौहंच्या। पूरे गाम तै ढेड सौ बाराती भूरे (बिमला के बटेऊ) की बारात मैं गए। खूब दारू के दौर चाल्ले अर नाच गाणा बी होया। सारे बाराती खुशी-खुशी सांझ नै बहू नै ढोळी मैं बिठा कै गाम मैं आगे। बख़्त बीतता गया अर जिब होळी आई तो फाग खेलणियां की टोलियां भूरे के घरां आकै उसकी बहू पै रंग गेर कै गई। बिमला नै बी अपणे रिश्ते के देवरां की कोरड़े तै खूब तसल्ली करी।

इसे तरियां उन्हैं खेलदे–खांदे तीन बरस बीतगे। बिमला नै इस बीच एक फूल से बेटे दिप्पू तीं जन्म दे दिया। इब दिप्पू बी दो बरस का हो लिया था। एक दिन बेरा ना किस बात पै गाम के सब तै शातिर माणस सोट्टे गेल भूरे की तू–तू मैं–मैं होगी। खींच–ताण इतनी बढ्ग़ी के सोट्टे नै भूरे तीं मजा चखाण का मन बणा लिया। फेर के था, चालगी सोट्टे की शाम–दाम–दण्ड–भेद की नीति।

भूरे का परिवार तीन पीढ़ी पहल्यां इस गाम मैं जमीन खरीद कै बस्या था। इस परिवार के आण तै उस गाम मैं इस बिरादरी के दो गोत होगे। बिरादरी का बहुमत था। इस कारण भूरे का परिवार गाम के पहले गोतियां नै पूरे भाई चारे तै स्वीकार कर लिया। दोनूं परिवारां मैं पूरा मेल–मिलाप अर भाई–चारा बणग्या। तीन पीढ़ी बीतगी अर अगली पीढिय़ां नै ठीक तै यो बी बेरा ना रह्या अक यू परिवार कदे बाहर तै आकै बसया था या उरै का–ए बसींदा सै। कलापुर पांच हजार बोट का बड़ा गाम था पर फेर बी कुणब्यां मैं आपसी भाई–चारा खूब था। तू–तू मै–मै तो घरां मैं होंदी–ए रहै पर इस गाम मैं कदे लट्ठां की लड़ाई होई हो इसा वाकिया गाम के किसे बुजुर्ग तक कै बी याद कोनी।

शातिर सोट्टे नै शदियां तै चली आ रही गाम की या शांति घडिय़ां मैं भंग करदी। उसनै तास्सां की टोल्ली मैं बेठे–बेठे होक्के की घूंट खींच कै बड़ी दर्द भरी आवाज बणाई अर बोल्या, ‘‘भाई, इब यू गाम कोनी बचै!’’

लाम्बा सा सांस खींच के वो फेर बोल्या, ‘‘गाम नै बेरा बी कोनी अर तीन बरस तै गाम मैं इसा जुल्म हो रह्या सै अक पुरख्यां की आत्मां बी ओठै सुरग मैं बेठी हमनै कोसदी होंगी। कसूर वार बी हम–ए सां, कदे कुछ जाणन का जतन–ए ना कर्या अक पिछले तीन बरस तै गाम के डांगर–ढोरां अर माणसां मैं सुख क्यूं नी रह रह्या सै। जद गाम के किसे माणस तै कोए माड़ा काम होज्या तै गाम के बुरे दिन डांगर ढोरां मैं को–ए दिखणे शुरू होया करैं।’’

सोट्टे की धीर-गंभीर मुद्रा मैं कही इन बातां का ओठै बेठे लोगां पै घणा असर होया अर सारे सोच मैं डूबगे अक इसा कै जुल्म होग्या। हिम्मत कर कै एक अधेड़ माणस नै बूझ्या, ''रै सोट्टे, भाई खोल कै बता के इसा कुणसा जुल्म होग्या जिसतै गाम के बुरे दिन आण लाग रे सैं, अर भरे गाम नै बेरा बी कोनी ?''

सोट्टा मुंह लटका कै बोल्या, ''भाई बात कहण नै मुंह बी कोनी पाटदा के तीन बरस तै अपणी धी नै अपणे गाम मैं बहू बणाऐ बेठे सां।''

सारे तासियां के मुंह खुले के खुले रैहगे। सारे एक सुर मैं बोल्ले, ''ओड बड़ा जुल्म किसनै कर दिया गाम मैं भाई... ?''

सोट्टा तळे नै सिर करकै बोल्या, ''भूरे नै तो थम सब जाणदे होंगे, गांज्जा पट्टी, जिसका ब्याह तीन बरस पैहल्यां टिड्डापुर गाम मैं होया था। उसकी बहुड़िया आपणी-ए गोतण तो सै।''

इतने मैं एक गाबरू छोरा उठ कै बोल्या, ''इसमैं कुणसा जुल्म होग्या? भूरे की तो सारी पट्टी अपणे गोत की ना सै, उनका गोत दूसरा सै अर अपणा गोत दूसरा सै। फेर थम सारे बी तो भूरे के बाराती बण कै गए थे, अर जाणैं बी थे अक टिड्डापुर गाम म्हारे गोतियां का सै। उस बख्त तो काका सोट्टा बी सिर पै दारू की बोतल धर कै नाचण लाग रह्या था। इब तीन बरस पाछै यू रिऐक्शन क्यूकर होग्या?''

एक तासडिया अधेड़ माणस उस छोरै नै धमकांदे होए बोल्या, ''अरै डटजा रै पी.एच.डी., इबे तो कुछ पकणा शुरु होया था अर तू चुल्हे की आग बुझाण नै चाल्या सै। जा भाग उरे तै, इसी बातां मैं दखल देणा बालकां का काम ना होया करदा।''

दूसरा बोल्या, ''इस छोरे की बातां की छोड्डो, थम अपणी सोच्चो अक हम इब के करैंगे ? कदिम्मी बात चालदी आई सै अक सबतै पहल्यां गोती भाई, फेर सारी असनाई। यू तो कती जुल्म होग्या, इब इसका कुछ हल तो सोच्चो, जे दुनिया नै बेरा पाटग्या तो इस गाम मैं तो इसा बख्त आजैगा अक रोज जवान छोरे तड़कै तै घरां के मुण्डेर्यां पै चढ़कै देख्या करैंगे के कोई रिश्ते आळा ना आया। कोए ना तो म्हारे गाम का रिश्ता लेगा अर ना उरै रिश्ता देगा। अपणी बाहण-बेट्टी नै ब्याहणिये गाम मैं भला कोण रिश्ता करैगा।''

फेर के था, सोट्टे की रेल पूरी तेज चालगी, बात आग की तरियां सारे गाम मैं फैलगी। गळी-चौराहे अर थाईयां मैं याहे चर्चा सुणाई देंदी। इतना राष्ट्रवाद तो गाम के बुड्डयां मैं अपणी जवानी के टेम भारत-चीन अर भारत-पाकिस्तान की लड़ाईयां मैं बी कोनी जाग्या होगा जितना गौत्रवाद उनमैं जागग्या। ठाल्ली बेठे पंचातियां नै अपणी ज्ञान गंगा बहाण का मौका मिलग्या। गिणे दिनां मैं-ए भूरा पूरी बिरादरी का खलनायक बणग्या। सरपंच नै पिप्पा पिटवा दिया अर गाम की बडी थाई मैं पंचायत का ऐलान होग्या। दिन ढळे पूरा गाम थाई मैं कट्ठा होग्या।

सरपंच खड़्या होकै बोल्या, ''भाईयो थम सबनै बेरा सै अक गाम मैं दो दिन तै के चर्चा चाल री सै। बात छोटी कोनी, कुछ टेम पैहल्यां म्हारी रिश्तेदारी के एक गाम मैं न्यूं-एं गोत-नात की बात पै एक छोरे-छोरी का कत्ल होग्या था। थम नै टेलीबीजन पै बी देख्या होगा अक उस गाम का के रौळा माच्या था। हम नी चाहंदे अक म्हारे गाम की शांति भंग होवै अर दुनिया मैं म्हारा बी डूडुआ पिटै। हमनै रळ-मिल कै इसका हल करणा सै ताके गाम अर गोत की इज्जत बची रहै।''

इतने मैं पी.एच.डी. उठकै बोल्या, ''गाम मैं कुणसी सी. बी.आई. जांच बैठरी सै, कल्ले सोट्टे चाचे नै चर्चा छेड़ दी अर गाम कट्ठा हो लिया। भूरे नै कुणसा गांम की छोरी भगा ली सै।''

इतने मैं एक पग्गड़धारी रिटायर फौजी उठ कै बोल्या ''अरै डट जा अंग्रेज, थारे जिस्यां नै तो नाश करण का ठेक्का ले लिया सै। चार अक्खर पढ़ कै बेरा नी के बणज्यां सै। हम नै दुनिया देखी सै, तू पंचायती बात मैं दखल ना देवै।''

उस बुड्ढे नै अपणी बात शुरु करी, ''यू मुद्दा न्यूं मिटण आळा कोनी। आज यू चक्सू जाग्या सै कल नै गाम के सारे छोरे जागैंगे अर गळी तै गळी मैं ब्याह होण लाग ज्यांगे। हम आज तो आपस मैं भाई हां पर कदे इसा टेम ना आजे अक सिमधी बणे नजर आवैं। भाईयो इस बात का पंचायती हल करो अर इस बुराई नै उरै-ए खत्म कर दियो।''

पंचायत मैं जोश सा भरग्या। फेर कौम का दूसरा ठेकेदार उठ्या अर आपणी मूच्छां नै बटा दे कै बोल्या, या कल्ले गाम की बात कोनी, यू तो टिड्डापुर तै बी जुड्या मामला सै। आखिर छोरी के बाप नै बी तो रिश्ता करदे हाण सोचणा चाहिये था अक म्हारे गाम मैं दो गोतां का भाई-चारा सै।''

आखर मैं पंचायत इस बात पै उठगी अक चार दिन पाछै इसे थाई मैं भूरे का पूरा परिवार, उसकी बहू अर उसके सासरे के लोग बी आपणे पंचातियां नै लेकै आवैंगे।

फेर के था, टिड्डापुर के पंचातियां नै बी बेट्ठे बिठाऐ थूक बिलोण का काम मिलग्या। चार दिन पाच्छै दोनूं गामां के अर गुहाण्डां तक के पंचायती गाम की थाई मैं कट्ठे हो लिये। मामला घणा तूल पकड़ग्या। गाम की थाई के बाहर जिप्पां, कारां अर मोटर साईकिलां की भीड़ लाग गी। थाई मैं पल्लड़ बिछगे, कौम के बड़े-बड़े ठेकेदार बणनिये कुर्सियां पै अर तमाशबीन लोग पल्लड़ां पै बेठगे। नौजवान तबका थ्हाई की कांधां पै बेठग्या।

इबकै पंचायत की प्रधानगी बी भूरे के गाम के सरपंच के हाथां मैं तै जांदी रही। बिना चुनी पंचायत का स्वयंभू प्रधान अर तुर्रे आला खण्डका भला होर किसे की प्रधानी क्यूकर बर्दाशत करदा। उसनै बिना टेम गवांऐ खड़े हो कै सबतीं राम-राम

बजाई अर फेर मामले मैं अपणी बाणी का तडक़ा लाया। उसनै थोड़ी देर तक अपणी कथा बांच कै फेर अपणे आप-ए अपणे हम प्याला कौमी ठेकेदारां की एक कमेटी घड़ दी। किसे की हिम्मत ना होई के उसनै कुछ कह दे। फेर थाई के अंदरले कमरे मैं बैठ कै उस कमेटी नै भूरे अर उसके घर आळी की जिंदगी का फैंसला बी कर दिया।

बाहर लिकड़ कै उस खंडके आळे कौमी ठेकेदार नै खंगार कै सबतीं चुप करवाण का जतन करदे होए बिरादरी पै आपणी दाब का बी अहसास करवाया।

उसनै भारी भरकम फैंसले के बोझ मैं दबण का नाट्क करदे होए आपणा भाषण देणा शुरु कर्या, ''भाईयो यू मामला इतना सीधा कोनी था अक पल मैं निपट जांदा। इसमैं जड़ै दो गोतां के भाई-चारे का स्वाल था ओड़ै-ए दो गामां की इज्जत अर समाज के मान-सम्मान का बी स्वाल सै। इब वो बक्खत कोनी रह्या अक दोनुआं नै कत्ल करण तक का हुकम दे दिया जावै। कानून बी घणे सख्त हो लिये अर सरकार बी। सारे सालसां नै मिल कै सर्व सम्मत अर दोनूं धिरां के हक का फैंसला त्यार कर्या सै। बोलो भाईयो सबनै मंजूर हो तो मैं सुणाऊं?''

भूरे अर उसकी घर आळी नै छोड़ कै जे कोऐ चुप थे तो थाई की दिवार पै खड़े नौजवान। बाकी सब पंचातियां अर तमाशबीनां नै उंची आवाज मैं हामी भर दी। पंचायत के प्रधान का जोश दूणा होग्या अर चेहरा सूरज की तरियां खिड़ग्या। उसनै अपणा सध्या होया अर घणे बुद्धिमान पंचातियां का कर्या होया फैंसला जनता के आगै धर दिया।

फैंसला यू होया अक भूरा आज तै बिमला का भाई सै। इब बिमला भूरे की बांह पै पौंची बांधैगी अर आपणे बाप के घरां चाल्ली जावैगी। उनके बालक दीपू नै भूरे धोरै छोड्या जावैगा। भूरे अर बिमला के बाप तीं इस गुनाह की सजा मैं हुक्का-पाणी बंद करण का हुकम होग्या अर भूरे तीं बी पांच बरस तक गाम तै बाहर रहण का हुकम होग्या।

आखर बिरादरी की बेटी की जिंदगी का स्वाल था सो बिमला की अगली जिंदगी का फैंसला करणा बी पंचायत नै अपणा धर्म समझ्या।

प्रधान बोल्या, ''भाई या बिमला बी बिरादरी की बेटी सै, इसनै बी बाप के घरां शोभा कोनी।'' दरियादिली दिखांदे होए इसका जिम्मा उस प्रधान नै खुद पै ओट्या अर बिमला के खातर आपणे ही दूर के रिश्तेदार की बात बी पंचायत मैं खोल दी।

उसनै बताया ''मेरे साळे की रिश्तेदारी मैं एक छोरा सै। माड़ी सी कजी सै टांग मैं बाकी कसर कोऐ ना सै, अर जमीन जायदार का तो घाट्टा-ए कोन्या। दस बरस पैहल्यां उसकी घर आळी गुजरगी थी। इब दो बालक सैं, एक 16 बरस का अर एक 12 बरस का। इसी जग्हां जाकै बिमला नै इज्जत बी मिलैगी अर इस बिचारी की जिंदगी बी कटज्यागी।''

पल्लड़ां पै बेठे तमाशबीनां नै फेर हामी भर दी। इसा लाग्गै था अक वैं तो शायद पैदा-ए हामी भरण नै होए हों।

इतने मैं थाई की दिवार पै खड़े छोर्यां का टोल्ला भडक्ग्या। बोल्ले ''आ ताऊ, यू तै कुछ बी कोनी होया। इन्हैं आज-ए फांसी क्यूं नी तोड़ देंदे। इनकी जिंदगी नरक बणाण मैं तो थम नै कोऐ कसर छोड्डी-ए ना सै।''

फेर वा-ए पी.एच.डी. पंचायत के बीच मैं आग्या अर भूरे की बाहं पकड़ कै बोल्या, ''भाई इन पंचातियां तै आग्गै बी देश बसै सै। तू घबरावै मतना, हम तेरे गेल हां, तू डरिये ना।''

कौम के ठेकेदारां पै या बात जरी कोनी गई। उन छोर्यां नै धमकांदे होऐ आपणे फैंसले नै लागू करण का टेम 10 दिन का धर कै उन्हैं पंचायत उठादी अर अपणी गाड्डियां मैं स्वार होकै चालदे बणे। भूरे का सुसरा डरदा होया बिमला नै अपणे घरां लेग्या अर भूरा डरदा गाम तै लिकड़ग्या। बिमला आपणे बाप के घरां जाकै पागल सी होगी।

उस पी.एच.डी. छोरे नै भूरे का साथ दिया अर मामला अदालत तक पौंहचग्या। अदालती फैंसला बी भूरे अर बिमला के हक मैं होग्या अर वैं अपणे घरां बी आगे। पर अदालत गाम के लोगां की विचार–धारा नै ना बदल सकी। कौम के ठेकेदारां नै बी इसमैं अपणी तौहीन नजर आयी अर नवे–नवे तरीक्यां तै भूरे अर बिमला की जिंदगी नै नरक बणाण की तैयारी होण लाग्गी।

भूरा बी बिमला नै लेकै किते दूर लिकड़ण की सोच रह्या था पर इब टेम कसूता चाल ग्या। बिमला दिमाग का संतुलन खो बेठी अर किसे काबिल ना रही। वा पागल कोनी थी पर उसनै ठीक बी कोऐ ना कहै था। टिड्डे की चाल अर कौम के ठेकेदारां नै एक भर्या पूरा घर तो उजाड़–ए दिया गेल मैं गाम अर समाज मैं बी जहर भर दिया था।

****
****

बारातियां का कर्ज

भूल्ली आज बुड्डी हो चुकी सै, बाळ पक कै धौळे तै पीळे हो चाल्ले, कमर झुक कै तीर–कमाण बणगी, खांसी करदे बखत सारे गात की हड्डियां कीर्तन करण लाग जां सै। पर नहीं बदली उसकी साठ बरस पुराणी दिनचर्या। तडकै़ उठ्दे ही गाम के घरां मैं गोबर–कूड़ा करणा, सबकै साफ–सफाई मैं हाथ बंटाणा।

पर उसके पोते नै इब यू काम आच्छा कोनी लागदा। वो अक्सर यू–ए कहै सै, ''दादी! इब तनै यू काम शोभा कोनी देंदा। एक तो तेरी उम्र कोनी रही इसे काम करण की, अर दूसरी बात या सै के इब म्हारा रुतबा बी घणा उंचा होग्या सै। मेरा बाबू सूबे का चेयरमैन रह लिया अर मैं डाक्टरी पास करकै अपणा हस्पताळ खोलण नै हो रह्या सूं।''

पोते की बातां का भूल्ली पै कोऐ असर ना था। उसका हठ अर जनून उसे तरियां कायम था। वा न्यूं कह कै अपणे काम नै करदी रैहंदी, ''बेटा तू ना जाणता इस गाम का मेरे पै कौड बड़ा श्यान सै।''

एक दिन उसके पोते निर्मल के सब्र का बांध टूट ग्या। उसनै अपणी दादी की बांह पकड़ कै वा अपणे धोरै कुर्सी पै बिठा ली अर अपणी कसम दे कै उसनै गाम के घरां मैं काम करण तै रोकण की कोशिश करण लाग्या।

भूल्ली नै पोते के मुंह पै हाथ धर कै कह्या, ''बेटा! इसा जुल्म ना करै। मैं तो जीते जी इस गाम का कर्ज ना उतार सकती, तू मनै अपणी जिम्मेदारी निभाण दे।''

पोता जिद करकै जद पूछ–ए बैठ्या तो भूल्ली नै उस 60 बरस पुराणी कहाणी की परत खोलणी शुरु कर दी जिसनै उसके जीवन की धार–ए बदल दी थी।

****

मार–काट तै कुछ बरस पहल्यां की बात सै चौरीगढ़ गाम मैं एक राधू नाम का माणस रह्या करदा। उसनै अफीम का कसूता ऐब लागग्या। इस मर्ज मैं अपणा खर्च चलाण नै वो चोरी करण लागग्या। एक बै राधू जमना पार के एक गाम मैं डांगरां की चोरी करदा पकड़्या गया। दूर देश मैं ना कोए शनाख्ती अर ना कोए जमानती।

चार दिन तक राधू हवालात मैं सड़दा रह्या। इस बीच एक खंसूट माणस उस हवालात मैं आग्या अर राधू तीं उसका मेल होग्या। उस खसूंट माणस नै बातां–बातां मैं बेरा पाट ग्या अक राधू कै एक स्वासण छौरी सै। खसूंट नै राधू तै वादा ले लिया अक जे वो अपणी बेटी नै उसकै ब्याह दे तो राधू की जमानत का इंतजाम पक्का हो जैगा।

मजबूरी मैं फंसे राधू नै उस आधी उम्र के काणिये खंसूट तांई बेट्टी ब्याहण का पक्का करार कर लिया। काणिया इतना तेज था अक अपणी अर राधू की जमानत के कागज बणवांदे हाण बिचौलिये तै कह कै राधू का गूंठा ब्याह के करार पै बी लगवा लिया अर तारीख बी पक्की कर ली।

राधू नै पहल्यां–ए अपणी छोरी का रिश्ता पोरा घाट गाम मैं कर राख्या था। जो तारीख काणिये नै ब्याह की धरवा ली कुदरती वा तारीख पहल्यां–ए राधू नै अपणी उस बेट्टी के ब्याह की धर राखी थी। उसे ब्याह के जुगाड़ मैं इस बार वो जमना पार के गाम मैं चोरी करण लिकड़्या था जिस कारण या दूसरी मुसीबत सिर पै आण पड़ी।

हवालात तै लिकड़ कै राधू शर्म तै सिर झुकाऐ चाल पड़्या। एक रात बीच के रठाण पै रुक कै पाएं चालदे होए अपणे गाम मैं पहौंचग्या। ब्याह का करार नेड़ै आंदा गया अर राधू सूख कै कांडा होंदा गया। बेटी नै भी बाप की मरज का बेरा कोनी था।

आखर मैं भूल्ली के ब्याह का दिन बी आण पौंहच्या। राधू नै जड़ै पैहल्यां रिश्ता कर राख्या था वा बारात गाम के कुएं

आळे बाग मैं आ कै रुकगी। थोड़ी देर पाछै गाम मैं रुक्का माचग्या अक राधू की धी की दूसरी बारात जमना पार तै बी आगी सै। लोगां मैं चर्चा छिड़गी अक एक छोरी की दो–दो बारात क्यूकर आई। गाम के पंचायती राधू के घर पहौंचगे अर पूरा माजरा जाणण की कोशिश करी। शर्म तै मरदे राधू नै जमना पार आळी चोरी की सारी बात अर काणिये का धोखा खुल कै पंचायत ताईं बता दिया। पूरी बात समझ मैं आण पाछै लोगां नै दोनू बारातां के मौजिज आदमी बुला लिये अर राधू की धी बी पंचायत मैं बुला ली। भूल्ली तीं सबके सामणे पूछ्या गया अक वा कड़ै जाणा चाहवै सै?

भूल्ली नै अपणे पहले रिश्ते नै मंजूर करदे होए चालबाज काणिये कै जाण तै मना कर दिया। पंचायती इबे उठे बी कोनी थे अक बात बारातियां तक बी पहौंचगी। इतने मैं पार आळी बारात मैं आए होए लठैतां नै पहली बारात पै चढ़ाई करदी। गाम के बाहर बुरी तरां ठैरा बाजग्या अर कुक्का–रौळ माचगी। इतने मैं पहली बारात तै एक पंड्डत आया अर भूल्ली के फेरे फेर कै उसके घर आळे पाल्ले तै गाम मैं भाजण का हुकम दे दिया। इब मामला कल्ले पाल्ले के ब्याह का कोनी रह्या था बल्कि पूरे गाम की इज्जत का मामला बणग्या था। पंड्डत नै ढोळी खातर आई बळदां आली गाड्डी बारणै ल्या कै भूल्ली–तीं उसमैं बेठण का हुकम दे दिया अर बळदां के कांधे पै जूळा धर कै भागण नै तैयार हो ग्या।

भूल्ली के घर आळ्यां नै डरदे–डरदे छोरी गाड्डी मैं बिठा दी अर पंड्डत नै बळद भजाणे शुरु कर दिये। गाड्डी के पाछै–पाछै दोनूं कान्हीं के बारातियां मैं ठैरा बाजता चालदा रह्या अर पंडत दीनानाथ गाड्डी नै भजांदा रह्या। एक गड्ढे मैं पड़ कै एक बळद का पैर मुड़ग्या अर वो उड़ै–ए गोड्डी ढैहग्या।

पंड्डत नै गाड्डी रुकदी देख उस बळद का जूळा अपणे कांधे पै धर लिया अर सरपट भागणा शुरु कर दिया। डोळी मैं बैठी भूल्ली के सांस अधर मैं अटके थे अर पंडत का हांफदे होऐ बुरा हाल हो रह्या था। उसके पाछै 4–5 मील तक बारातियां मैं खेड़ बाजती

चालदी रही अर आपस मैं सिर फूट्दे रहे पर पाल्ले के बारातियां नै गाम की इज्जत बचाण ताई सिर–धड़ की बाजी लाण का मन बना राख्या था। आखर मैं पाल्ले का गाम धोरै आ लिया तो पार आळे बारातियां के गोड्डे गिरगे। वैं पाछै हटणा शुरु होगे। पंड्डत दीनानाथ बी गाड्डी नै ले कै गाम मैं बड़ग्या। उसके पाछै पाल्ले के ब्याह की जंग जीत कै सारे बाराती बी गाम मैं आण बड़े। पाल्ले नै बहू मिलगी अर गाम की इज्जत रहगी।

पाल्ले की मां गाम के घरां मैं गोबर कूड़े का काम कर्या करदी। वा कुछ दिन पाछै पाल्ले की बहू भूल्ली नै बी काम पै लेजण लागगी। गाम की लुगाईयां भूल्ली नै टोघ–टोघ कै उसके ब्याह की बात बूझया करदी अर भूल्ली सारी बात बताण पाछै गाम के लोगां नै आशीष दिया करदी अक उनके ताण उसकी इज्जत बचगी अर उसके बाप का मान रहग्या, नहीं तै बेरा ना वा उस खंसूट पारिये गेल्यां कड़े हाड रुळांदी फिरदी।

भूल्ली के दिल मैं या बात घर करगी अक इन सारे बारातियां का उसपै कर्ज सै जिनकी बदौलत वा आज इस गाम की बहू बण कै इज्जत का जीवन जी रही सै। उसकी सासू चाल बसी तो भूल्ली नै बारातियां का कर्ज तारणा जारी राख्या। अच्छा टेम आया अर उसका बेटा राजनीति मैं तरक्की करग्या। उसके घरां नौकरां–चाकरां की लैन लागी रैहण लगी, पर भूल्ली की दिनचर्या ना बदली अर ना बदलण की आस। आज उसनै अपणे पोते की कसम इसे करकै रोक्की अक वा इबे कर्ज उतारण चाहवै सै। पोता बी दादी की बातां नै सुण कै चुप होग्या अर दादी के जज्बे के आगै नत् मस्तक होग्या।

****

****

गाम की बेटी

सोमा शक्ल सूरत तै चाहे छोरी लागदी हो पर उसके काम छोर्यां तै बी बढ़कै थे। तड़कै उठकै सारे डांगरां पै घास गेरणा, कुऐं तै पाणी भर कै ल्याणा, फेर पीळी पाट्टे बळ्दां नै ले कै खेत मैं लिकड़ पड़ना। दिन चढ़े उसका बाप भजना हाजरी की रोटी ले कै खेत मैं पहुंचता, उस बख्त तक सोमा दो ढबड़ी हल तै बाह कै त्यार राखदी। फेर बाप हल चलांदा अर सोमा डांगरां खातर घास काट्दी। खेत अर घर का कोए बी इसा काम कोनी था जिसनैं सोमा छोर्यां तै बढ़कै ना करदी हो, छूट रोटी-टूक बणाण के।

भजने कै चार छोरियां थी जिनमैं सोमा सबतै छोटी थी। उसनै होश संभालण तै लेकै बाप गेल्यां कांधे तै कांधा मिला कै काम कर्या अर कदे भजने तै पूत की कमी महसूस ना होण दी। जद भजना तीन बेटियां नै ब्याह-मुकला कै फारिग होग्या तो उसनै सोमा की चिंता सताण लाग्गी। उनके परिवार नै गाम के सारे लोग चाह्या करदे। इस करकै सोमा बी पूरे गाम की बेटी थी। गाम के सब लोग-लुगाईयां नै यूए डर था अक सोमा नै कौण राखैगा अर क्यूकर या किसे घर की बहू की जिम्मेवारियां संभाळ सकैगी? सबनै बेरा था अक सोमा नै चूल्हे-चौंक्के के कामां कै कदे हाथ ना लाया था। उसकी तो बोल-बाणी तक माणसां आळी थी। कदे-कदे तो वा छोर्यां की तरियां गांळां तक दे दिया करदी।

रिश्तेदारां के जोर तै आखर एक जग्हां सोमा के रिश्ते की बात टिकगी। बात सिरै चढ़गी अर वा घड़ी बी आण पौंहची जद सोमा की बारात आणी थी। गाम गोरै बारात के बाजे आळे बड़े से ढोल पै जद डंक्का बाज्या तो भजने का काळजा धड़कणा शुरु होग्या। भगवान की दया तै सांझ तक सारे काम सुख-सेती निपटगे। डोळी गाम तै लिकड़गी अर कल्ले भजने नैए नहीं बल्कि पूरे गाम नै सुख की सांस ली, अक छोरी के ब्याह मैं कोई

अड़चन ना आई। गाम तो रात नै सोग्या पर भजने अर उसकी घर आळी नै सारी रात नींद ना आई।

भजना बोल्या, ''भागवान तनै सोमा तै ठीक तरियां समझा कै बी भेज्या था अक ना?''

रामकली बोली, ''मनैं तो अच्छी तरियां समझाया था अक बेटी कती चुप रहिये, जो कहैं वा-ए करिये। उस घर मैं किसे की बात का बुरा ना मानिये अर अपणे गुस्से पै काबू राखिये।''

आखर अगला दिन लिकड़्या अर अपणा पूरा सफर तय करकै ढ़ळग्या। भजने अर उसकी घर आळी का काळजा बी टिकण लागग्या। करदे-करांदे 15 दिन लिकड़गे पर सोमा के सासरे तै कोए खबर ना आई। उसके मां-बाप इसनै ले कै डरदे-डरांदे भगवान का शुक्र बी मना रहे थे अक सोमा शायद अपणी गृहस्थी मैं सफल हो रही सै।

एक दिन चाणचक सोमा के सास अर ससुर सोमा नै लेकै उसके मायके मैं पहौंचगे। उन्हैं देखदे सार-ए भजने अर उसके घर आळी की सांस रुकणनै होगी। वैं दोनूं भाज कै समधियां के पैरां मैं गिरकै रोण लागगे।

भजना बोल्या, ''चौधरी साहब म्हारी बेटी नादान सै इसकी गलतियां नै माफ कर दियो। थोड़े दिन मैं थारे घर के कायदे समझ जैगी। इसकी गलतियां की कठोर सजा ना दियो।''

सोमा के ससुर नै भजने तीं अपणे पैरां मैं तै ठाया अर उसकी कोल्ली भर ली।

सोमा का ससुर बोल्या, ''चौधरी साहब, थारी बेटी नादान कोनी या तो दुर्गा सै दुर्गा। हम तो इसके पैर धो कै पीवांगे।''

भजना इन बातां नै मखौल समझदा रह्या अर उसका समधी रामफळ बोलदा गया।

''.....इस देवी नै तो म्हारे घर की हालात बदलकै धरदी। जो घर उजड़न के कगार पै था वो-ए घर आज शांति-बण जिसा लाग्गे सै।''

भजने पै रूकया कोनी गया अर भरे गळे तै पूछ बेठ्या अक इसा के कर दिया उसकी मोलड़ बेटी नै? अर फेर रामफल नै जो अपणे घर की कहाणी सुणाई वा किसे अचम्भे तै कम ना थी।

****

सोमा जिस दिन सासरै गई थी उस दिन उसके सुसरे नै छोड़ कै घर के सारे माणस शराब के नशे मैं टुन्न थे। उसनै सारी रात बैठ कै काटी। उसके घर आळा तक इतना शराबी था अक तड़कै गुवाड़ मैं पड्या पाया। सोमा नै ना तो इसा कदे मायके मैं देख्या था अर ना रिश्तेदारी मैं। उसका दम इसे माहौल मैं घुटण लागग्या। इसे तरीयां करदे करांदे पांच दिन बीतगे। पहलां तो वा सोचदी रही के ब्याह का चा सै, पर जद यू जलूस हर रोज होंदा रह्या तो उसका सब्र बी जबाब देग्या। छटे दिन की सांझ ढळी तो सोमा अपणे दिमाग मैं नई तैयारी करकै बेट्ठी थी।

उसके घर आळा सांझ नै घर के बारणै आंदे सार–ए नशे की झोक मैं देहळियां मैं गिर पड्या। सोमा का सबर कती जबाब देग्या। वा घर आळे नै बांह तै पकड़ कै अपणे कच्चे कोठड़े मैं खींच ल्याई अर उसकी अच्छी तरियां तसल्ली करदी। इतने मैं रुक्का रौळा सुण कै उसका जेठ बी नशे मैं लड़खड़ांदा होया उसके कोठड़े आगे आ कै सोमा नै गाळ बकण लाग्या। सोमा पै तो जणू देवी दुर्गा स्वार हो चुकी थी। सिर पै आपणी चुन्नी का मंडासा मार कै उसनै कूणे मैं धर्या लट्ठ ठा लिया अर अपणे घर आळे गेल्यां जेठ की बी अच्छी तसल्ली करदी। इबे यू तमाश होकै हट्या–ए था अक उनका तीसरा भाई बी दारू मैं टुन्न होकै घर पहौंच लिया। सोमा तो शायद उसकी बाट–ए देखरी थी। वा अपणे इस जेठ नै बारणै बड़दे देखते–ई आंगण मैं पड़ी खाट तै उठी, आपणा लट्ठ ठाया अर जेठ पै पिल पड़ी। जद तक उस शराबी की समझ मैं कुछ आंदा, उसकी बी अच्छी तसल्ली हो ली थी।

सोमा की सास, सुसरा अर दोनूं जठाणियां दांदां मैं जीभ दिये यू सारा माजरा देखदे रहे। सोमा नै तीनूं शराबी एक कोठड़े मैं मूंद्दे अर खुद अपणी सासू धोरै जाकै बेठ्गी। उसका गुस्सा इब ठण्डा होण नै था। दोनूं जठाणियां अर सासू डर तै कांप री थी।

सोमा बोली, ''यू कंज्जर-खान्ना ना तो मनै कदे देख्या सै अर ना उरै चालण दयूंगी। थम घणी कमजोर हो जो यू आज तक झेलदी आई, मेरी गेल लट्ठ बेशक ना ठाइयो पर इनका साथ बी ना दियो, फेर देखियो यू घर क्यूकर सुधरैगा।''

उन तीनों नै डरदे-डरांदे सोमा की हां मैं हां भरदी। सोमा का सुसरा सारी रात बेठ्क मैं बेठ्या इस घटनाक्रम पै चिंतन करदा रह्या। कदे उसनै सोमा देवी दुर्गा का अवतार नजर आंदी रही अर कदे काली-मां का अवतार। सारे घरक्यां नै आंखां मैं रात काट्टी अर खींच ताण कै अगले दिन का सूरज लिकड़्या। सोमा नै अपणी सासू तै कहकै तीनूं शराबियां के कोठड़े की सांगळ खुलवा दी। छोटड़े नै चुप-चाप बळद खोल्ले अर हळ जोड़ कै खेत मैं डिगरग्या। बड़े नै न्यार का टोकरा ठाया अर घेर मैं चाल्या गया। दो घड़ी चींग-चंघाड़ कै बिचला बी गांम मैं लिकड़-ग्या। बडे नै घरां आकै चुप-चाप हाजरी की रोट्टी मांग ली। छोटड़े की रोटी सोमा नै अपणे सुसरे के हाथ खेत मैं भेजदी।

करदे करांदे दिन ढळग्या अर घर के सारे लोग सांझ का खाणा खाकै अपणे ठिकाणै लाग्गण लाग्गे। दिन छिपे पाच्छै बिचला भाई फेर शराब के नशे मैं धुत्त हो कै बारणै पौंच लिया। इबकै सोमा की जरूरत कोनी पड़ी, उसकी बिचली जठाणी नै-ए मंडासा मार्या अर लट्ठ ठाकै उसके हाड सेक दिये। वा अच्छी तसल्ली करकै उसनै अपणे कोठड़े मैं खींच लेगी।

अगला दिन लिकड़्या तो सबतै पहल्यां बिचला उठ्या अर डांगरां पै न्यार पाण लाग्या। बड़ा दांती-पल्ली लेकै खेत नै डिगरग्या। छोटे नै हळ जोड़ लिया। इस तीसरे दिन की सांझ जमां श्यांति तै ढळगी। तीनों भाईयां नै चुप-चाप अपणी लुगाईयां तै रोट्टी

मांग कै खाई अर रात काट ली। चौथा दिन बी जमां श्यांति तै गुजर्या।

घर मैं रेचकी होई देख कै पांचवीं रात मैं रामफळ अपणी घर आळी नै बोल्या, ''भागवान! या बहू तो देवी लिकड़ी जिसनै इस उजड़दे घर मैं श्यांति कायम कर दी।''

सोमा की सासू हां मैं हां मिला कै बोली, ''काळे के बाबू हमनै इसकी इज्जत करणी चाहिये, इसी भाग आळी बहू के तो पैर धोकै पीलें तो बी जुल्म कोनी।''

तड़कै होंदे-ई रामफल अर उसकी घर आळी नै दोनूं बड़ी बहुआं आपणे धोरै बुलाई अर उनतीं पुच्छया अक वैं सोमा तै नाराज तो कोनी?

वैं दोनूं एक सुर मैं बोली, ''नाराजी के, हम तो इसके श्यान मैं दबगे। इसनै तो म्हारी जिंदगी सुधारण का तरीका दे दिया। हम तो सदा इसके कर्जदार रह्वांगे।''

वैं चारों कट्ठे होकै सोमा धोरै गए। उन्हें कट्ठे आंदे देख कै सोमा डर कै सहमगी। इन पांच दिनां मैं उसनै बी आपणे बाबू अर मां की बात याद आण लागगी थी। उसनै न्यू लाग रह्या था अक इब इस घर मैं उसका दाणा-पाणी उठ लिया सै। पर उन चारों प्राणियां के करतब देख कै सोमा तो कती पागल सी होगी। उसकी दोनूं जठाणियां उसके पैरां मैं थी अर सासू उसनै छाती कै ला रही थी। सबनै सोमा का धन्यवाद कर्या तो उसका हौंसला थमग्या। इस तरियां रामफल चौधरी का घर सिमरग्या।

ब्याह की बात नै 15 दिन बीतगे, एक दिन रामफल अपणी घर आळी तै कैहण लाग्या, ''भागवान! चाल नए सिमधाणे मैं गेड़ा दे आवैं। बहू का बी इसके घरां फेट्टण नै जी कर रह्या होगा। हम दोनूं बी उन चौधरी-चौधरण का धन्यवाद कर आवांगे जिनकी जाई इस दुर्गा नै म्हारा घर सुधार दिया सै।''

इस तरियां सोमा की या कहाणी उसके मायके मैं बी पौंचगी। फेर के था, सारे गाम मैं आग की तरियां या बात फैलगी अक सोमा आई सै अर उसके सासू अर ससुर तीं उसनै खुश कर राख्या सै। सारी कहाणी गाम के बाळकां तै लेकै बुड्ढयां तक फैलगी। सबनै धरती नचकारी अक इस छोरी का घर बसग्या। बस्या बी के, इसनै तो एक उजड़दा होया पूरा घर बी बसा दिया। भगवान इसी भागवान छोरी सबनै देवै।

****
****

तीन मण कणक

आज गाम का हर मजदूर परिवार दाण्यां बिना दुखी सै। फसल के टेम पै दाणे आए कोनी अर इस टेम आज के भाव लेण का ब्यौंत किसे का ना सै। दूसरे पास्सै गाम के किसान भी सुखी कोन्या। तूड़ी बिना उनके डांगर भूखे मरण नै होरे सैं।

किसान–मजदूरां की बरसां तै चाल्ली आ रही आपसी मिल–बांट नै बेरा ना किसकी नजर लागगी। ना आपस मैं बोल–चाल रहरी सै अर ना लेण–देण। गाम के मजदूर परिवारां का खेतां की डौळां पै लिकड़ना बी बंद हो ग्या सै।

कल तक इस गाम मैं किसान–मजदूर परिवारां का आपसी तालमेल घर की तरियां था। सब लोग आपस मैं भाई–चारा बरत्या करते। कौम के उस एक ठेकेदार नै इसा माहौल बिगाड़्या अक बरसां का भाई–चारा घण्ट्यां मैं टूट कै बिखरग्या।

वा ना तो किसे का जाणकार था अर ना–ए रिश्तेदार। अधकचरी दाड़ी, धौळा मैला पायजामा, नूणमिर्च के रंग का लाम्बा कुर्ता अर कांछ मैं लाम्बी तणी आळा झोळा। कणक कटाई का काम शुरु होया–ए था अक यू अवतार बेरा ना कित तै गाम मैं उतर ग्या। फूल्लो दांती ले कै लामणी करण चाल्ली–ए थी अक आण मिल्या यू अवतार 'ताई राम–राम' करकै।

फूल्लो के घर आळा अर छोरा–बहू बी उसके गेल मैं–ए लामणी करण जा रे थे। वैं बोल्ले, "भाई पिछाण्या कोनी तू कोण सै ?"

होठां मैं दबे जर्दे का पाणी थूकदे होए उसनै अपणी पिछाण बताई अक वो सै मजदूर यूनियन का नेता। उसनै अपणी बात कुछ इस तरियां शुरु करी, "इबकै कणक के दाम आच्छे खासे बढ़े सैं, किसानां की आमदणी बी बढ़ी सै, अर मैं आया सूं गाम के मजदूरां की बी आमदणी बढ़ाण।"

फूल्लो अर उसका परिवार चौंक कै बोल्या, "भाई तू क्यूकर बढ़ावैगा म्हारी आमदणी?"

नेता जी नै समझाणा शुरु कर्या, "पहल्यां थम दो मण दाण्यां पै कणक का किल्ला काटो थे अर भार बांधण नै जूणे बी आपे बणाओ थे। इब इसा नी होगा। जे किसान तीन मण कणक देंगे अर जूणे बी आपे बणा कै देंगे, साथ मैं चार पांड तूड़ी की देंगे तो खेत कटैगा नहीं तो मैं बाहर के गाम मैं थमनै इसे भाव पै काम दिवाऊंगा।"

बस फेर के था, फूल्लो नै ओड़ै-ए दांती बगाई अर चाल पड़ी गाम कान्ही नेता का हुकम फैलाण। जितने मजदूर लामण ी करण चाल्ले थे सब रुकगे। नेता जी की चिकणी-चुपड़ी बातां नै इसा असर दिखाया अक गाम के खेतां मैं कणक का तुणका बी कटणा हराम होग्या। किसानां मैं बी चिंता बैठगी अक इब के होगा। उनके बीच चर्चा होई अर फेर गाम की बड़ी थाई मैं पंचायत बुलाई गई। मजदूर बी ओड़ै बुलाए गए अर गाम के किसान बी कट्ठे होगे।

लम्बड़दार खड़्या होकै बोल्या, "भाई मजदूर भाईयो सारे गाम के किसानां नै थारी बात पै विचार कर कै फैंसला कर्या सै अक ना तो म्हारी दो मण अर ना थारी तीन मण, इबतै ढाई मण नाज खरा होया अर जूणे करण का दो धड़ी नाज और बी दीया जावैगी। जो किसान जूणे आप करकै देगा वा ढाई मण नाज देगा।"

मजदूरां के चेहर्यां पै रोणक दौड़गी अर वैं खुशी-खुशी इस शर्त पै कणक काटण नै राज्जी होगे। थाई मैं ताड़ी बाजगी अर पंचायत उठगी। किसानां नै बी सुख की सांस ली।

फूल्लो कांछ बजांदी अपणे कुणबे नै ले कै फेर लामणी करण चाल पड़ी। इबे खेत तक पौंची बी ना थी अक वा-ए अवतार फेर प्रकट होग्या। फूल्लों नै खुश हो कै उसका धन्यवाद कर्या अर खुशी-खुशी पंचायत की पूरी कथा सुणाई।

नेता जी के चेहरे की रंगत फेर बदलगी।

वो बोल्या, ''करवा ली ना इसी-तिसी। फेर चार धड़ी दाण्यां की पूंछड़ छोड़ दी। किसान अपणी मां नै रोंवैंगे अर पूरी तीन मण देंगे, थम थोड़ा डटो तो सही।''

फूल्लो नै लालच आग्या अर उसनै देख कै नेता का चेहरा बी खिड़ग्या। गाम मैं हड़ताळ शुरु होगी। कई दिन बीतगे पर एक तुणका बी कणक ना कटी। कुछ दिन पाछै वाहे नेता आया अर मजदूरां नै तीन मील दूर के एक गाम मैं काम का लालच दे कै लुप्त होग्या। मजदूरां की टोलियां पैदल अर सैकलां पै उस गाम मैं पौंहची तो ओड़ै बी बात रास ना आई। ओड़ै के मजदूर किसानां के भाई-चारे नै इबे किसे कौम के ठेकेदार की नजर ना लाग्गी थी। ओड़ै काम तो के मिलणा था, टांग तुड़ाई बी पूरी ना होई। फूल्लो के गाम के मजदूर चुप-चाप अपणे घरां नै मुड़ आए अर घरां मैं दुबक कै बेठगे। दूसरे कान्हीं खेतां मैं सूख कै बारूद बणी कणक अर उपरले के डर तै किसानां की बी सांस सूखगी। इतने मैं उन्हैं बी एक अवतार मिलग्या। धौळा कुरता-पायजामा अर पैन्नी मूछ आळा यो अवतार खुली जीप तै उतर्या अर सीधा लम्बड़दार की बैठक मैं उसके धोरै पहौंचग्या। लम्बड़दार बुझे मन तै बैठक मैं बेठ्या था। उसके धोरै आकै उस जीप आळे नै जोर दार राम-राम बजाई।

बोल्या, ''चौधरी साहब राम-राम, के बात गाम मैं सोता सा किसा पड़र्या सै?''

लम्बड़दार नै बुझे मन तै कह्या, ''के बतावां भाई किसे नै इसी तिल्ली फैंकदी अक मजदूर लोग गाम मैं कणक का तुणका बी काटण नै तैयार कोनी। फसल खेत मैं खड़ी सै, टेम कसूता चाल रह्या सै। इसे हाल मैं गाम मैं के खुशी दिखैगी।''

मूछड़ तुरंत बोल्या, ''मजदूरां की या मजाल, म्हारे गाम मैं तो किसे मजदूर की म्हारे आगै खांसण तक की हिम्मत कोनी होंदी। इनका खेतां की ढौळां पै चढना बंद कर दयो, चार दिन

मैं आंख कटोरे सी खुल जांगी। अर लम्बड़दार जी थम फसल की चिंता कती ना करो। दूर के गाम मैं नई कम्बाईन आई सै, मैं आज–ए भेज द्यूंगा, अर किसे किसान भाई के दाणे मजदूरां के भरोसै खेतां मैं ना रुळैंगे।''

मुच्छड़ नै अपणा वादा निभाया अर दिन ढ़ळे तक गाम मैं कम्बाईन पहौंचगी। सारे गाम मैं दाणे ठाण की आपा–धापी मचगी। दिन–रात एक करकै फसल सिमटण लागी अर किसानां की जान मैं जान आगी।

दूसरे कान्ही मजदूरां नै बी उनका हमदर्द बणकै उतर्या वा नेता रूपी अवतार कड़े टोह्या ना पाया, जो उन्हैं पड़ौस के गाम मैं काम दिलवाण का वादा करै था। दस दिनां मैं नौबत या आई के खेतां मैं कणक के फान्ने तो खड़े रहगे पर दाणे मण्डी मैं जा लिये थे। कम्बाईन आळे का रीप्पर दूसरे गाम मैं फान्यां की तूड़ी बणा रह्या था। इस गाम आळ्यां तै 15 दिन आगे का टेम दे राख्या था। इसे बीच टीक दुपैहरी मैं चाणचक आंधी चाल पड़ी। माड़े बख्त का फेर अक बिजळी की तार आपस मैं टकरागी अर फान्यां मैं कसूती आग माचगी। आंधी के जोर तै आग इसी भडकी के रोक्के ना रुकी। गाम के जोहड़ धौरै मातू के पांच ढबड़े छोड़ कै सारे गाम के फाने जळ कै राख होगे। पूरे गाम मैं मातम सा छाग्या। मजदूर तो पहल्यां–ए दाणे अर सुक्के घास नै तड़परे थे, किसानां के डांगरां खातर बी सूक्के का काळ पड़ग्या।

दूसरे कान्ही पोबारी गाम के जैलदार की बैठक मैं महफिल लागरी थी। दारू की बोतलां के ढक्कण टका–टक खुलरे थे।

जैलदार बोल्या, ''भाई रामू तनै तो कती कमाल करदी रै। इबकै दस लाख रपईय्ये लाकै यू सोच्या था अक बेरा ना या कम्बाईन कुछ कमावैगी बी अक ना। तनै तो इसा जादू कर्या अक पांच गाम्मां मैं तो कणक का तुणका तक हाथ तै ना कट्या।

रिप्पर नै बी पीस्से पूरे कर दिये इसे बरस। बस राकड़ा गाम मैं फान्ने जळण करकै ओठै रिप्पर ना चाल्या नहीं तै इबकै यू तो अपणी किम्मत का सवाया कमा देंदा। तेरे इस गाम के काम के 10 हजार बजाऐ थे, ले पकड़ 8 हजार रप्पईये अर आगै जीरी काटण तै बी मजदूरां नै रोक्कण की कोए नई तरकीब इब तै तैयार कर ले। तू तो पक्का लीडर पाकग्या भाई। जीरी मैं तनै जे ठीक जलवा दिखा दिया तो तेरे 15 हजार खरे।''

जैलदार नशे की झोक मैं धोरै बेठे मुच्छड़ कान्ही लखा कै हंसदे होए बोल्या, ''तौं बोल भाई किसान नेता हीरामल! नगद लेगा अक दारू के दौर मैं-ए सर जैगा! तू तो फेर आपणा जमीदार भाई सै।

हीरामल अपणी मूच्छां नै बटा दे कै बोल्या, ''जैलदार जी! दारू तो जमींदारां की नशां नै अकड़ान की दवाई सै, या तो रूंग्गे मैं-ए समझो। इस जिप्सी मैं तेल घलवाण नै अर कौम के नाम पै नेतागिरी करण खातर घुम्मण नै तो नगद-नारायण बिना काम ना चाल्लै। आगै मेरी मांग कोनी जो थारी मरजी हो, आगे का ब्योंत देख कै कर ल्यौ। यू तो हाथ नै हाथ सै.....।''

****
****

मत जाईयो परदेश

धर्मपाल कै तीन बेट्टे थे। जिसी एक साधारण किसान की जिंदगी होवै, उसी-ए जिंदगी धर्मपाल का परिवार जी रह्या था। गाम के लोगां मैं आम बात होवै के ब्याह दिये, मुकला दिये, अर हम फारिग होए। धर्मपाल नै बी तीनूं बेट्टयां नै ब्याह कै खुद नै फारग समझ लिया। तीन घरां की बहुआं आण तै घर मैं बासण खड़कणे शुरू होगे।

बाप नै सोच्या अक बेट्टे न्यारे होकै अपणी गृहस्थियां सुख तै चलावैंगे। तीनुंआं तै दो-दो किल्ले जमीन दे कै न्यारे कर दिये अर खुद छोटे बेट्टे मैं रैह्ण लागग्या। छोटा बेट्टा हाथ का दस्तकार था, शहर मैं दुकान कर ली अर उसकी अच्छी गृहस्थी चाल पड़ी। बिचला बेट्टा अपणे दो किल्यां गेल आठ-दस किल्ले ठेक्के पै लेकै अपणी खेती तै घर की गाड्डी चलाण लाग्या। बड़म-बड़े बेट्टे करमे मैं दारू का कसूता ऐब था। उसका दो किल्यां की खेती मैं दारू का खर्च बी ना चाल्या करदा, घर का खर्च तो दूर की बात रही।

घर आळी अच्छे खानदान की थी, घर नै संभाळणा जाणै थी। उसनै अपणे भाईयां पै तै एक भैंस ल्या कै बांध ली अर उसके दूध नै बेच कै घर का खर्च चलाण लाग्गी। करदे करांदे उसनै चार डांगर जोड़ लिये अर खींच-ताण कै अपणे बाळकां का पेट पाळती रही। कई बै जिब माड़ा बख़्त आवै तो बेरा कोनी पाट्या करदा। कह्या करैं अक ऊंट पै बेठे माणस नै बी कुत्ता काट लिया करै सै। कुछ इसा-ए करमे गेल बणग्या।

उनके दूर के रिश्ते का एक मामा उनके घर आण लागग्या। वो मामा करमे गेल्यां इसा हम-प्याला होया अक उनके घर की हर बात जाणग्या। उसनै करमा आपणे जाळ मैं उलझाणा शुरु कर दिया। एक दिन घेर मैं बेठे दोनूं जणे दारू पी रहे थे।

मामा करमे तै बोल्या, ''जिसी जिंदगी तू जी रह्या सै इस तरियां तीन बाळकां आळे परिवार का गुजारा कोनी चाल्या करदा। किमे बाहर लिकड़न का जतन करले, यू टाबर तरजैगा।''

करमा बोल्या, ''मामा मैं अणपढ़ ठूंठ क्यूकर बाहर लिकड़ सकूं सूं? मेरे बस का तो किमें बी कोन्या सै।''

मामा बोल्या, ''बाहर के मुलकां मैं दिहाड़ी-मजदूरी का बी बोहत काम सै। तेरे जिसे ठेठ अणपढ़ बी लाखां कमावैं सैं।''

करमा उसकी बातां मैं उलझ कै रहग्या अर मामा सोचण का टेम देकै चालदा बण्या। हफ्ते पाछै वो फेर करमे के घरां आण धमक्या अर फेर दारू का दौर चाल पड़्या।

करमे तै गिलास पकड़ांदे होऐ वो बोल्या, ''अरै करमे, किमें सोच्या बाहर के बारे मैं अक ना?''

करमा बोल्या, ''मामा सोचूं तो मैं बी था अक किमें दो पिस्सयां का हिल्ला कड़ी पाजै तो बड़ी छोरियां के हाथ पीळे करण का जुगाड़ बी बणजै। ना तै यैं खूड बेच कै-ए काम चाल्लैगा।''

मामा बोल्या, ''तनै खूड बेचण की खरी कही भाई, पर उस टेम पै बिके खूड अगले बाळकां नै के देंगे? उनकी तो जिंदगी-ए कती तबाह होजैगी। तूं इबे बाहर का जुगाड़ बणाले, खूड तै जितने चाहवै फेर बणा लिये। मेरा एक रिश्तेदार सै दस बरस तै इंगलैण्ड मैं। उसका बाबू उरै बेठ्या राज करै सै राज। उनके घरां तो डालर बरसैं सै डालर।''

करमा बोल्या, ''मामा ओड़ै जाण का कितना-क् खर्च आवै सै?''

मामा बोल्या, ''भाई आवै तो घणा सै पर मेरा वा रिश्तेदार मेरी कदे मोड़ै कोनी। मैं उसनै कह कै सस्ते मैं तेरा जुगाड़ करवा द्यूंगा। दो-चार दिन मैं पूछ कै तनै सारा हिसाब बता द्यूंगा।''

चार दिन पाच्छै करमे के घेर मैं फेर दारू के दौर चाल रहे थे। मामा इबकै करमे के करम मिटाण का पूरा जुगाड़ करकै आया था।

बोल्या, ''रै करमे, मेरी बात होई थी तेरे बारे मैं। मेरा रिश्तेदार राजी होग्या तनै इंगलैण्ड बुलावण खातर। तेरे तो भाग खुलगे भाई, खर्च बी तनै घणा कोनी करणा पड़ैगा। पचास हजार रपईयां का जुगाड़ कर ले बस।''

करमा बोल्या, ''मामा पचास हजार रपईयां मैं-ए इंगलैण्ड पौंच जाऊंगा के मैं ?''

मामा बोल्या, ''अरै मोलू तू तो कती-ए मूर्ख सै, भला पचास हजार में जहाज की सवारी होया करै कदे ? बाकी का जुगाड़ तो इंगलैण्ड बेठ्या वो छोरा अपणे आप करैगा। उसका कहणा सै अक कुल आठ लाख का खर्च आवैगा जिसमैं वो तनै काम बी दिलवा देगा। तू न्यू कर बाकी पीस्से उस छोरे पै तै लेले। बस इतने तक अपणे खूड उसके बाप के नाम लिखवादे। ओड़ै कमा कै जिस दिन तौं उसके पिस्से उतार देगा उसे दिन वो जमीन तेरे नाम पै मुड़कै उतरवा देंगे।''

करमा बोल्या, ''ना मामा, इबे मेरा बाबू जिवै सै। जमीन बेचण की सुणदे-ई वो तो कती मर लेगा।''

मामा बोल्या, ''तू इबे मरण लागरया सै, अर सोच करै उस बुड्ढे की। फेर जे इब कुछ ना कर्या तो बी यें खूड तो तू बड़ी छोरी के ब्याह मैं बेचण की सोच-ए बैठ्या सै। भाई जे बाकी जिंदगी सुख तै काटणी चाहवै सै तो या छोटी सी जरब इब-ए खा ले। एक दो बरस मैं गाड्डी सूत आजैगी अर या जमीन तो वापिस आवैगी-ए गाम के होर लोग्गां के खूड बी तू-ए खरीददा नज़र आवैगा।''

शराब के खुमार मैं करमे पै सुनहरी सुपन्यां का नशा सा छाण लाग्या। उसनै मन-ए-मन फैंसला कर लिया अक वो इंगलैण्ड जरूर जावैगा।

अगले दिन आढ़ती धोरै गया अर दो हजार रपईये ले कै एक पासर्पोट बणवाणिये पै जा चढ़ाए। बखत कसूता चाल रह्या था सो पासर्पोट बी दो महीने मैं बण कै घरां आग्या। गाम की सोसाईटी तै पचास हजार रपईयां का कर्ज बी बणग्या अर मामे नै खूड बी अपणे रिश्तेदार के बाबू के नाम चडवा दिये।

इस सारे मामले मैं करमे की घर आळी कती सरीक ना थी। उसनै पूरा जोर लाया अक करमा यू कदम ना ठावै। अपणे रिश्तेदारां तीं बुलाकै बी जोर पवाया पर बखत नै साथ कोनी दिया। छः महीन्यां के भीतर करमा इंगलैण्ड पहौंचग्या। पाछै घर मैं कुछ ना बच्या। ढांगरां के ताण भागवान लुगाई बाळकां का पेट पाळदी रही। इब फर्क यू आया अक वा बेचारी घास खातर बी बिगानी ढौळां खुरचण जाण लाग्गी।

एक साल बीतग्या, घरां करमे के फोन तो आंदे रहे पर बात दुख भरी-ए होंदी। करमा बुरी तरियां टूट चुक्या था। एक दिन उसनै अपणी घर आळी तै बताया अक वा नकली मामे का रिश्तेदार उसनै एयरर्पोट तै लेकै तो गया था पर ओड़ै एक गुरुद्वारे मैं छोड़ कै चाल्या गया। बीच मैं एक दो बार आया तो याहे सलाह देग्या अक वो काम का जुगाड़ कर रह्या सै, ''बस तू बाहर ना लिकड़िये तेरे कागज कच्चे सै।''

छः महीने तक उसके आश्वासनां पै करमा गुरुद्वारे मैं सेवा करकै पेट चलांदा रह्या, पर छः महीने पाच्छै वा काम मिलण की आस जमा-ए जांदी रही। इब तो उस मामे के रिश्तेदार नै फोन तक उठाणे बंद कर दिये। ईब तै करमा भीतर-ए-भीतर इसा टूटग्या अक अपणी घर आळी धोरै फोन करणे बी छोड़ग्या। उसका दारू का ऐब ओठै बी जाग ग्या।

गुरुद्वारे मैं उसकी हालत पै तरस खाकै एक सेवादार उसनै दो पिस्से दे देंदा अर उसका दारू का जुगाड़ चाल जांदा। उस सेवादार तीं वा अपणे घर बार की सारी बात सांझी करण लागग्या।

सेवादार भला माणस था, वो करमे पै जोर देंदा अक घरां डिगरजा, उरै तेरी जिंदगी कोनी कटै। करमा रो कै कैंहदा अक किस मुंह तै घरां जाऊंगा। ओड़ै तो छोड्या-ए कुछ नी मनै।

एक दिन इसा माड़ा आया अक बखत नै कती आंख-ए मूंद ली। तड़कै गुरुद्वारे के बाहर सडक़ पै करमा औंधे मुंह पड्या पाया। सेवादारां नै देखदे सार-ए ऐंबुलैंस बुलाई अर उसनै ठा कै अस्पताल मैं लेगे। डाक्टरां नै घोषित कर दिया अक यू तो पूरा हो लिया। सेवादारां के बी हाथ पैर फूलगे। करमे का हमराज सेवादार आगै आया अर उसनै करमे की जेब तै डायरी काढ़ ली। उसनै पहल्यां तो करमे के उस रिश्तेदार पै फोन कर्या जो उसनै काम दिलवाण के बहानै इंगलैण्ड ल्याया था। उसतीं सारी कहाणी सुणाई।

रिश्तेदार बोल्या, ''मैं इसके घरां पता करके सांझ तक अस्पताल मैं पहौंच जांगा। सांझ बीतगी पर वो कोनी आया। सेवादार नै फेर फोन कर्या पर बात ना हो सकी। अगले दिन उसका फोन-ए बंद पाया गया। सेवादार नै हिम्मत ना हारी। उसनै करमे की डायरी तै उसके नम्बरां पै फोन करणे शुरु कर दिये। किसे नै कह्या अक वो इस माणस नै जाणदे कोनी, किसे नै कह्या अक इसका भारत मैं कोई सै-ए कोनी ओड़े-ए संस्कार करदयो। बात के, बस सबनै बहाने बणाणे शुरू कर दिये।

आखर मैं करमे के पड़ौस मैं फोन मिलग्या अर उसकी घर आळी तै बात होगी। सारी कहाणी सुणकै पहल्यां तै टूटी पड़ी उस दुखियारी नार पै तो जणों मुसीबतां का पहाड़-ए टूट ग्या। उस बखत की मारी का इसी बात सुण कै रोणा बी कोनी आया। उसनै तो अपणे कंगाल घर की हालत देख कै या चिंता सताण लागगी के करमे की लाश अपणी धरती पै इब क्यूकर आवैगी ?

उसनै अपणे भाईयां तै बात करी तो उन्हैं बी यू डर सताण लागग्या अक यू लाखां का खर्च उन्हैं–ए ठाणा पड़ैगा। वैं बोले अक जो भगवान की मार्जी थी वा भाणा तो बीत ग्या। इब उसकी माट्टी नै रूळाण का कोऐ फायदा कोनी। उरै लाश आण मैं कागजां की कारवाई मैं–ए घणा बख़्त लाग जैगा। जितने दिन मैं लाश उरै आवैगी वा देखण जोगी बी कोनी रैहण की। उन्हें उस सेवादार पै फोन कर दिया अक इसका संस्कार ओठै–ए कर यो। जो खर्च आवैगा हम भेज दयांगे।

पर करमे का हमराज वो सेवादार घणा भला माणस था। उसनै ठाण ली अक चाहै उसनै कितनी मेहनत क्यूं ना करणी पडज़ै, पर वो करमे की माट्टी नै परदेश मैं कोनी रूळण देगा, उसनै उसके गाम की माट्टी मैं–ए मिलाण का जतन करैगा। उसनै फेर डायरी ठा ली अर नाम के हिसाब तै देखण लाग्या अक इन मैं बाहर लिकड़वां कौण माणस हो सकै सै।

उसकी मेहनत नै फळ दिया अर एक इसे माणस तै बात होगी जो उसकी बातां तै राजी होग्या। वो करमे का दूर का रिश्तेदार था। उसनै सेवादार तै सारी बात करी अर बताया अक वो बी किसे तरियां करमे की माट्टी नै देश की धरती पै ल्याण की सोच रह्या था। उनकी मेहनत नै काम कर्या अर दोनूं के पीस्से अर पसीने तै गिणे दिनां मैं करमे की माट्टी नै अपणे देश की धरती नसीब होगी।

उन सारे लोगां के मुंह खुल्ले रहगे जो अपणे सिर तै बोझ उतारण खातर करमे की माट्टी नै बी परदेश मैं–ए रूळाण की तैयारी कर बेट्ठे थे। करमे के घर आळी नै इतनी तसल्ली जरूर होगी अक उसके जीवन साथी नै आखर मैं अपणे गाम की माट्टी तो नसीब होगी। वा उन की अहसान–मंद तो जरूर होगी जिनके जतनां तै करमे की माट्टी उसके धोरै पहौंचगी पर उनके कहण पै बी अपणे बडे छोरे नै परदेश भेजण नै त्यार ना होई।

सेवादार नै घणा जोर लाया अक वा उस छोरे नै काम दिलवा देगा अर घर की हालत सुधरजैगी। सारा खर्च करण नै बी वा–ए तैयार था, पर कह्या करैं से अक आग का खाया पटबीजणे तै डरै। इब तो उसकी जुबान पै याहे बात थी अक कोऐ मत जाईयो परदेश। भूखे पेट गुजारा कर ल्यांगे।

****

****

खींच ल्याई गाम की माट्टी

देश बंटग्या, अखण्ड भारत के नक्शे पै विभाजन की लकीर खिंचगी, धर्म के नाम पै कत्ल–ए–आम नै दुनिया खातर ज़हर भरे संदेश छोड्डे, पर उस अणपढ़ बाळक के खातर कोई फर्क ना था। कदे अखण्ड भारत की माट्टी मैं पैदा होया वो बाळक पाकिस्तान के एक नामी शहर का बसींद्दा बण चुक्या था। उसकी जन्म भूमि भारत मैं अर वो पकिस्तान मैं! परिवार के नाम पै जो कुछ था वो बी हिंदुस्तान का हिस्सा अर दोनूं देशां की सांझली सीम तै घणी दूर। बख़्त नै उसके नसीब मैं धन–दौलत तो घणी लिख राक्खी थी पर अपणी माट्टी का मोह बी कड़े काळजे के ढूंगे पास्से मैं छुप्या था। यू–ए कारण था के कदे का बेनाम बाळक लाहौर का नामी सेठ तो होग्या पर अपणी जन्म भूमि नै पाण की टीस उसके दिल मैं उफणदी रही।

देश के बंटवारे नै तो दुनिया 1947 मैं हिलाई थी पर उसतै पैहल्यां उस बाळक की दुनिया कती हिल चुकी थी। वो था संयुक्त पंजाब के हरियाणा आळे हिस्से का एक घणा बड़ा सा गाम। उस गाम मैं एक बुड्ढे नै श्याणी उम्र मैं दूसरा ब्याह करवा लिया। पहली घर आळी तै उसके तीन बेट्टे थे अर एक नई ब्याहता तै बी होग्या। वो बाळक इतना अभागा था अक जन्म देंदे–ई उसकी माँ नैं आँख मूंद ली। दो साल की उम्र मैं उसके सिर तै उस बुड्ढे बाप का बी साया उठग्या।

बड़े तीनूं भाईयां के ब्याह हो रहे थे पर उनमैं तै कोए बी भौज उस अनाथ बाळक नै देख कै राजी ना थी। कुपोषण का शिकार होण करकै उसकी टांगां मैं जान ना रही ज्यां तै वो लंगड़ाकै चाल्या करदा। उसके असली नाम नै तो सब भूल गए, अपणी ओड़ तै उसके कई नाम घर अर बाहर आळ्यां नैं धर लिये। कोए उसनै सुदामा कह्ंदा तो कोए लंगडिया़।

वो अभागा सब नामां नै आत्मसात करदा पर किसे का प्रतिवाद ना कर पांदा।

बेरा ना उसके सीधे दिनां का फेर था अक उसकी भौजां की बददुआवां का फळ था के एक दिन वो बाळक गाम तै गुम होग्या। किसे नै उसकी तलाश की जहमत ना उठाई। बड़ा गाम था। एक दूसरे नै नाम तै बी कम लोग जाण्या करदे। बतावैं सै अक गाम की दूसरी पट्टी मैं किसे छोरी का ब्याह था। ब्याह के रौळे मैं वो बाळक बी उस ओड़ नै लिकड़ग्या।

जद डोळी चाल्ली तो वो बी डोळी के पाछै-पाछै हो लिया। डोली गाम तै 3 मील दूर एक रेल के टेशन पै रूकी अर बारातियां नै रेल पकड़ ली। डोळी मैं तै छोरी अर बटेऊ बी रेल मैं चढ़ लिये। वो बाळक बी खेल-खेल मैं रेल मैं चढ़ग्या। राह मैं डब्बे के बार धोरै बेट्ठे-बेट्ठे बेरा ना उसतीं कद नींद नै आ घेरया। जद उसकी आंख खुली तो डोळी अर बाराती कोए बी उस डब्बे मैं नजर ना आया। एक तो अणजाण लोग्गां तै भरया वो रेल का डब्बा अर ऊप्पर तै पेट काटदी भूख नै वो बरदाश्त ना कर पाया। उस अभागे का रोणा फूटग्या।

उसकी हालत पै तरस खाकै धोरै बेट्ठे एक बुजुर्ग दम्पत्ति नै वो अपणे धोरै ला लिया। उसतै खाणे का पूछ्या तो भूख के आगै मजबूर बाळक ना नहीं कर पाया। उन भागवानां नै उसतीं छिक कै खाणा खळाया अर पाणी दिया। जद बाळक की आत्मा तृप्त होगी तो उन्हैं उसके बारे मैं जाणन की चिंता होण लाग्गी। बाळक ना तो अपणे गाम का नाम जाणे था अर ना-ए मां-बाप का नाम। अपणे नाम के बारे मैं बी उसपै कोई सीधा सा जबाब ना था। कदे खुद नै काळा बतांदा, कदे सुदामा अर कदे लंगड़ा।

दम्पत्ति नै आपस मैं सलाह करकै उसतै बूझ्या अक वो उनके गेल चाल्लैगा के? बाळक कुछ ना समझ पाया तो उन्हैं उसतीं बताया अक उसनै अच्छा खाणा अर अच्छे कपड़े मिलैंगे।

बाळक नै झट दे–सी हां करदी। घरां कुणसा उसके घणे लाड लडाए जावैं थे जो उसनै सोचण की देर होंदी। उसकी भौजां तो उसके लिकड़ण का शुक्र–ए मनावैं थी।

बीच मैं रेल बदली होई अर एक दिन के सफर पाछै वो दम्पत्ति उस बाळक नै ले कै लाहौर के टेशन पै उतरग्या। गाम के बाळक नै पहली बार इतना बड़ा शहर देख्या था। उसकी तो आँख खुली की खुली रह्गी। कौतूहल मैं घिर्या वो बेरा ना कद उस दम्पत्ति गेल्यां उनके घर की देहळी पै पौंहच गया। घरां जाकै उसके खातर नवे कपड्यां का इंतजाम कर्या गया। नह्ळा–धुळा कै उसकी अच्छी सेवा होई।

उस दम्पत्ति की कोई संतान ना थी सो उन्हैं वो बाळक अपणे बेट्टे के रूप मैं पाळणा शुरु कर दिया। एक पंड्डत बुला कै उसका नामकरण करवाया गया। रेल मैं मिल्या होण करकै उसका नाम रख्या गया रेल्लू राम। उसनै रेल तै लाहौर ल्याण आळा वो दम्पत्ति शहर के गिणे चुणे नाम्मी बाणियां मैं तै था। उनकी शहर मैं करियाने की दुकान थी। वो अपणे धर्म के बाप उस बाणिये गेल्यां उनकी दुकान पै जाण लागग्या। लाला नै वो अपणे पूत की तरियां पाळ्या अर उसतै व्यापार का पूरा हिसाब किताब दे दिया। इस दौरान जे कोई कमी रही तो या थी अक रेल्लू राम नै पढाई पै कती ध्यान ना दिया। व्यापार के काम मैं तो वो पूरी तरियां निपुण होग्या पर रह्या अणपढ–ए।

बखत अपणे रंग बदलदा गया, रेल्लू उमर मैं परिपक्कव होण के साथ काम मैं भी निपुण होंदा गया। लाला टेम–बे –टेम उसनै व्यापार की जिम्मेवारियां देंदा गया अर आखर मैं पूरी तरियां रेल्लू तीं अपना वारिस घोषित कर दिया। बख़त नै अपणे रंग दिखाए अर रेल्लू के धर्म के मां बाप एक–एक करकै या दुनिया छोड़ कै परलोक सिधारगे। उन्हैं अपणे जीवन मैं रेल्लू की सारी जिम्मेवारियां निभाई पर एक मजबूरी बस उसका ब्याह ना कर पाए।

मजबूरी बी या–ए थी अक एक तो रेल्लू अणपढ़ था अर दूसरा उसकी जात का बेरा ना था। इस बात का मलाल तो उस बणिया दम्पत्ति नै था पर उन्हैं आस थी अक कोऐ ना कोए उनके बेटे नै जरूर ब्या देगा। पर उनकी या इच्छा पूरी होण तै पैहल्यां–ए राम नै उनतीं संभाळ लिया। रेल्लू कल्ला रहग्या सो उसका घरां अर दुकान पै मन ना लागता। उदासी मै वो उड़ै के मुसलमान व्यापारियां गेल्यां बेठण लागग्या। आपसी विश्वास बढ़दा गया अर रेल्लू के हमदर्द भी बढ़दे गए।

इसे बीच देश मैं तै अंग्रेजां के जाण का बख़्त आग्या। जांदी हाण उन गोरे अकलमंदां नै इस भोले देश के लोगां में अलगाववाद का जहर भर दिया अर माच गया कत्लेआम। पूरा देश धर्मांधता की आग मैं जळ रह्या था। लाहौर संयुक्त पंजाब की राजधानी था अर कत्लेआम का ज्यादा असर दिल्ली तै लाहौर तक–ए था, सो उस शहर मै बी हिंदुआं पै अत्याचार होण लाग्गे। रेल्लू राम अणपढ़ बेशक था पर मंज्या होया व्यापारी अर कुशल दिमाग बणिया हो लिया था।

इसतै पहल्यां अक लाहौर मैं आग पूरी फैलदी रेल्लू तीं उसके दोस्त मुसलमानां नै कह्या अक भाई एक बै तू उरै तै दिल्ली कान्हीं डिगरजा, जद शांति होवैगी हम संभाळ ल्यांगे अर तू वापिस आ जाईये। रेल्लू नै ठीक तै तो कुछ बी याद ना था पर एक धुंधली सी याद उसके मन मैं अपणे गाम की थी। उसनै सोच कै ख्याल धार लिया अक किसे तरियां बी हो अपणे गाम नै तलाशैगा।

उसनै बचपन की बातां पै ध्यान देणा शुरु कर दिया अर एक धुंधली सी याद उसके दिमाग मैं आई। एक बै उसकी बड़ी भौज उसके भाई तीं कलछतर (कुरुक्षेत्र) नहाण की बात करै थी। उसका भाई उसकी भौज नै रेल मैं बिठा कै कलछतर लेग्या था अर सांझ नै वापिस आ लिया था। रेल्लू के दिमाग मैं आया अक उनका गाम कड़े कुरुक्षेत्र के धौरे–ए सै।

उसके दिमाग नै काम कर्या अर वो सारी तैयारी करकै कुरुक्षेत्र आण का मन बणा बैठ्या।

उसनै अपणी दुकान की सारी जिम्मेवारी अपणे साथियां तै दे दी अर उनतै रप्पईये ले कै चाल पड़्या अपणे गाम नैं। रेल तीं उसनै अम्बाळे तक का सफर तय कर्या अर फेर कुरुक्षेत्र पहुच गया। उसनै कुछ दिनां मैं इस छोटे से शहर मैं अपणा करोबार जमा लिया। व्यापार के अनुभवी रेल्लू राम नै थोड़े दिनां मैं अपणा नाम शहर मैं खूब कर लिया। इब उसनै शुरु कर्या अपणे गाम नै तलाशण का अभियान।

एक दिन रेल्लू राम जींद आळी रेल मैं बेठ लिया अर इतने दिनां की खोजबीन तै जुटाई जाणकारी के आधार पै अपणे गाम नै तलाशण की राह पकड़ ली। उसनै धुंधली सी याद उस टेशन की थी जड़ै तै बचपन मैं डोळी गेल्यां वो रेल गाड्डी मैं बेठ्या था। उसके भले भाग थे अक वो टेशन भी आया जो उसनै देख्या होया सा लाग्या। रेल्लू राम उस टेशन पै उतर ग्या अर उस गाम मैं पहौंच ग्या। एक बैठक मैं वो कुछ बुड्डयां धोरै बेठ्या अर उनतै अपणे बचपन की बातां करण लाग्या।

शुरु मैं तो किसे कै कुछ समझ मैं ना आया पर उसके कुणबे का एक बुड्डा भी ओठै बेठ्या था जिसनै रेल्लू की बांता तै अर्थ काढ़ लिया अक यू तो अमर सिंह चौधरी की बात करै सै। उसनै बूझया अक भाई तू वाहे तो नीं भला जुणसा गलाबे की छौरी के ब्याह में खूग्या था? रेल्लू नैं कुछ अंदाजा सा लाया अर हां भर दी।

उस बुड्डे नै उसतीं गाम के बीच में एक घर दिखाया जिसके घेर मैं पुराणा पीपळ का दरख़्त खड्या था। उस दरख़्त नै देखदे–सार–ए रेल्लू के जेहन मैं बचपन की यादां कौंधगी अर याद आया अक किस तरियां वो भूक्खा प्यासा इस दरख़्त नै अपणी मां समझ कै इसकी छांव मैं सोया करदा। उसनै उस बुड्डे के पैरां कै हाथ लाया अर आंखां तै आंसूआं की धार बरसण लागी।

इतने मैं उस बुड्डे नै घर मैं जाकै हांक मारी, रै ग्याने...बाहर नै लिकड़-कै देख कोण आया सै?

एक फटे हाल बुड्डा घर तै बाहर लिकड़्या अर आंखां पै हाथ धर कै देखण लाग्या। बुड्डे नै बताया अक यू सै धारा छोटा भाई जुणसा गलाबे की छोरी के ब्याह मैं खूग्या था। ग्याने नै रेल्लू की कोल्ली भर ली अर रोण लाग्या। ग्याने की भावज बाहर आई अर ग्याने नै बताया अक देख तेरा देवर गमलू आया सै। वो रेल्लू के पहरावे नै देख कै भौंचक्की सी रहगी। एक सेठ जिसे कपड़्यां मैं यू वाहे गमलू सै जिसतीं वैं कदे हाथ लांदे बी कतराया करदी।

उसनै अपणी सोचां पै काबू पांदे होए रेल्लू तीं अंदर आण का न्यौता दिया अर भाग कै घर के भीतर कूणे मैं खड़ी टूट्टी सी खाट बिछाई। रेल्लू भाई नै लेकै उस खाट पै बेठग्या अर अपणा झोला धौरै धर लिया। उसकी भावज भाग कै कढ़ौणी मैं तै दूध का गिलास भर ल्याई अर उनके आगै धरती पै बेठ कै बतलाण लागी। उसनै अपणी चिकणी चूपड़ी बातां का जाळ रेल्लू पै गेरणा शुरु कर दिया।

ग्याना उसनै धमकाकै बोल्या रुकजा बदकार, थारे कर कै म्हारा यू भाई म्हारे तै बिछड़्या था। आज इसनै देख कै तूं घणी मिट्ठी ना बणै। मेरे याद सै अक किस तरिंया थारे जिसी बदकार लुगाईयां की बातां मैं आकै हमनै अपणे फूल से भाई तीं दुख दिये, जिन्हें हम सारे भुगतरे हां।

वो रेल्लू तीं बोल्या, "भाई तू घर तै के गया था उरै तो आफतां का पहाड़-ए आग्या था। भगवान नै इन बदकारां की साजा म्हारे तैं दी अर तेरा बड़ा भाई माया राम बखत तै पैहल्यां आंखां तै आंधा हो कै रूळ कै मरया। तेरी बड़ी भौज बी कोड़ तै मरी अर मैं अर या बदकार इतने बदकिस्मत सां अक इबे इन दुखां नै भोग रे सां। साहूकार के कर्जे मैं सारी जमीन जांदी रही। आज तेरे भतीजे दिहाड़ी मजदूरी करैं सै

अर या बदकार इब बी पापां के घड़े भरै सै।"

रेल्लू तीं उनपै तरस आया अर अपणे झोळे मैं तै कुछ रप्पईये काढ़कै अपणे भाई तीं दे कै वापिस शहर मैं चाल्लया गया। गाम मैं चारौं पासै रौळा मचाग्या अक एक माणस 40 साल पाच्छै अपणे गाम मैं आग्या सै। उसके बचपन का नाम तो कोए जाणै कोनी था अर इब का अपणा नाम उसनै किसे तै बताया कोनी था, सो लोगां नै अपणी ओड़ तै उसका नाम धर दिया ख्याल्ली, जिसनै इतने बरस पाच्छै बी अपणे गाम का ख्याल आग्या।

कुछ दिन मैं सारे गाम नै बेरा पाटग्या अक ख्याली लाहौर तै आया सै अर कुरुक्षेत्र मैं उसका बड़ा कारोबार सै। चापलूस लोग उसतीं जाणकारी काढ़ण लाग्गे। दूसरे कान्हीं रेल्लू नै बी शहर मैं आकै नींद ना आई। वो अपणे बचपन के सारे दुखां नै भूल कै अपणे भाई के बारै मैं सोचदा रह्या। आखर मैं उसनै ठाण लिया अक वो अपणे बाप की औलाद नै भूखी ना मरण देगा। वो फेर गाम मैं पहौंच गया अर अपणे भाईयां के दो छोरयां तीं अपणी दुकान पै राक्खण नै शहर मैं ले आया।

40 साल के अरसे मैं उसनै कई नाम मिलगे, दुनिया नैं जाणग्या, अर फेर सिंचण लाग्या अपणे बाप की जड़ां नै। पहलां तो गमलू तै रेल्लू बण्या था अर इब वो रेल्लू तै ख्याली बणग्या। ख्याली कई साल तो भतीज्यां के गेल दुकान चलाण का प्रयास करदा रह्या पर जद उनतीं व्यापार मैं ना ढाळ पाया तो गाम मैं जमीन ले कै देदी। बुढ्ढापे का साया अपणे पै आंदा देख कै उसनै व्यापार समेट्या अर जमा पूंजी बाप की जड़ां नै सौंप कै आप हरिद्वार की राह पकड़ ली।

एक बाप की देहळी पै दुखां का बोझ ले कै आया वो अभागा उसे बाप की पीड़ियां नै भाग आळी बणाकै, जीवन भर का बोझ ले कै एक दिन गंगा घाट पै प्राण देग्या।

ओठै आश्रम के साथियां नै उसके भतीज्यां ताईं पता दे दिया अर उसकी माट्टी आखर मैं उसकी असली माँ यानि गाम की माट्टी मैं मिल गई। आज बी ख्याली उर्फ रेल्लू उर्फ गमलू गाम के लोगां मैं चर्चा का बिंदु रहै सै।

****
****

ताऊ पजाबा

वा जेठ की तपदी दुपैहरी, गर्मी इतनी अक रूखां की छांह भी छांह तलाशदे होऐ रूखां के तळै छुपी जा रही थी। पशु–पक्षी मारे गर्मी के अपने घरौंद्यां मैं छुपे बैठे थे। उस झुळसाण आळी गर्मी मैं अपनी कमर पै कताबां का झोळा लटकाए मैं खेतो की सुनसान राह पै चाल्या आ रह्या था।

या बात उन दिनां की सै जद मैं नौंवी कलास मैं पढ्या करदा। म्हारे गाम में छोटा सा स्कूल था जो कदे मेरे बाप नै मंजूर करवाया था, उड़ै बस पांचवीं कलास तक पढ़ाई करवाई जाया करदी। पांचवीं पाछै अगली पढ़ाई खातर या तो पांच किलोमीटर दूर शहर मैं जाणा पड़्या करदा या फेर तीन किलोमी्टर दूर के गाम मैं पैदल के रास्तै जाणां होंदा, जड़ै दसवीं तक के स्कूल थे। उन्हें दिनों म्हारे गाम के धौरे एक गाम मैं एक दसवीं तक का स्कूल बी बणग्या जो म्हारे गाम तै बस ढेड़ किलोमीटर दूर था। मेरे घर आळ्यां का विचार था अक शहर जाकै बाळक बिगड़ैं हैं। इसे खातर मेरा दाखला उसे नए खुले स्कूल मैं करवाया गया। उस गाम तै मेरे गाम तक एक गमी (कच्चा रास्ता) थी। सारा दिन खेतां मैं ट्रैक्टरां अर डांगर–ढोरां के आण–जाण तै उस पै काफी धूल उठी रह्या करदी जो गर्मियों में बहुत ज्यादां तपया करदी।

जिस दुपैहरी का मनै जिक्र कर्या वा दुपैहरी बी कुछ इसी–ए थी। मैं एक बजे स्कूल तै छुट्टी होण पाछै सीधा घर कान्ही जा रह्या था। राह मैं मनै एक ट्यूबवैल पै पाणी पिया अर आम्ब के दरख़्त की छां मैं बैठ गया। बेरा नी कद मेरी आँख लाग गई। जद मैं उठ्या तो देख्या अक उस ट्यूबवैल का मालिक सरदार मेरे धोरै खड़्या था। मैं हड़बड़ा कै उठ्या अर हाथ जोड़ कै उसतीं नमस्ते बजाई।

उसनै मेरी नमस्ते का जवाब देंदे होए कह्या, 'की गल काका अज निंद्रा आ गई सी।'

मनैं मुस्करांदे होए नीची नाड़ करकै हां मैं सिर हिला दिया। कुछ आई गई बातां पाछै मनै उसती बख़्त पुच्छ्या। उसनै बताया अक ढाई बजगे। मैं एक दम उठ्या अर अपणे गाम कान्हीं चाल पड़्या।

इबे मैं गांव तै कुछ दूर-ए था अक अचाणक गाम मैं तै रोण की आवाजां सुणाई देण लाग्गी। उन आवाजां नै सुणकै मेरे दिल की धड़कण अचाणक बढग़ी। वैं आवाजां लुगाईयां के इसे विशेष तरां के रोण की थी जो किसे माणस की मौत पै सुणाई दिया करैं सै। मेरे घबराण का असली कारण यू था अक यैं आवाजां म्हारे घरां कान्ही तै-ए आ रही थी।
मैं तेजी तै घर कान्हीं नै सटक्या। गमी के धौरै खेतां मैं डांगर चगांदे एक छोरे कान्ही मेरा ध्यान पड़्या तो मैं उस धौरे रुक्या अर पूछण लाग्या अक गाम मैं के होग्या सै? उसने बताया अक पजाबा मर ग्या। इतना सुणदे सार-ए मेरे दिल मैं जोर का धक्का सा लाग्या। मेरी चाल माड्डी पड़गी अर चित घूमग्या अतीत की यादां मैं। मेरी आंख्यां के आगै ताऊ पजाबा चल चित्र की तरियां घूमण लाग्या।

****

बाळकां खातर डर का दूसरा नाम रहे ताऊ पजाबा का चरित्र म्हारे खातर बहुत डरावना था। गड्या होया गात, गंजा सिर, आंखां पै नजर का गांधी जिसा चश्मा, हाथ मैं खुरपी या लाठी, गोड्यां तक उंची धोती अर गात पै बिना बांहां की मटमैली सूती गरखी।

गाम की फिरणी पै धूळ मैं खेलदे बाळकां नै जद बी यू चरित्र नजर आ जांदा तो वैं तुरंत उरै-परै भागण लागदे।

इसका कारण था ताऊ पजाबे का वो बाड़ा जो फिरणी के गेल लागता था। हालांके इसकी जाणकारी मनै बी घणी देर मैं लागी, अर बाकी बाळकां नै तो थी–ए कोन्या, अक यू ताऊ पजाबे का बाड़ा सै। हम अकसर उस बाड़े मैं गुल्ली–डण्डा खेल्या करते। उसनै शायद इसे बात की चिड़ थी। जद बी बाळक ओढ़ै खेलदे दिखदे तो वो उनके पाच्छै भाज पड़दा।

बाळकां के खातर उसके दिल की इस कठोरता तै हम सब घबराया करदे। यूहे कारण था अक अकसर बाळक उसतीं पाच्छे तै गाळ दिया करदे। जद बी बाळकां नै खेलदे–खेलदे वो दिखाई दे जांदा तो सारे बाळक डर के मारे खेल बीच मैं छोड़ कै–ए भाज पड़्या करदे। जे कोई बाळक उसके हाथ लाग जाया करदा तो वो उसकी बांह नै पकड़कै बांह की डोळियां नै यू कैंदे होए जोर तै दाबदा अक ल्या तेरी गुल्ली देखूं। उसका गुल्ली देखण का यू अंदाज इतना भयंकर था के आच्छे–आच्छे तगड़े बाळकां की बी रोणी फूट पड़्या करदी। उसके इसे बरताव तै बगड़ के सारे बाळक उसतै डर्या करदे।

जे ताऊ के घर बार की बात करैं तो उनके परिवार मैं हमनै ज्यादातर दो–ए जी देक्खे। एक ताऊ अर एक म्हारी ताई चलती जिसनै लुगाईयां कसाण आळी के नाम तै बुलाया करदी। हमनै अकसर ताऊ अर ताई तीं आपस मैं झगड़दे ही देख्या। ऐसे मौके शायद बहुत ही कम होंगे जद किसे नै ताऊ अर ताई तीं प्यार तै आपस मैं बतळांदे देख्या हो। ताई कमर पै हाथ धर कै थोड़ा झुक कै चाल्या करदी।

उनपै करीब 30 बीघे जमीन थी जिसनै अकसर ताऊ ठेक्के या बंटाई पै देकै राख्या करदा। फेर बी हमनै कदे ताऊ तीं घर पै ठाल्ली बेट्ठे ना देख्या। वो सारा दिन अपणे खेतां मैं छोटी–छोटी क्यारियां मैं तमाखू या लह्सण आदि नै खोददा दिखदा या फेर खेतां की ढोळां पै तै दूबड़ा खोद कै डांगरां खातर ल्यांदा दिखदा। हमनै सदा ताऊ–तीं अपणे खेतां अर डांगरां तक सिमटे ही देख्या।

न्यू तो उनकी तीन छोरियां बी थी पर हमनै कदे ठीक तै किसे छोरी नै ताऊ के घरां रहंदे ना देख्या। पता नीं अक ताऊ नै अकेले रहणा पसंद था या वैं छोरियां–ए उन धोरै रह कै राजी ना थी। मेरी मां अर दूसरे बढेरे बताया करदे अक पजाबा ताऊ दिल का काळा कोनी था अर ना–ए वा कदे किसे का बुरा कर कै खुश था, हां वो थोड़ा अक्खड़ जरूर था। इसका कारण बी शायद यू रह्या हो अक उस कै कोऐ छोरा ना था। उसके इसे अक्खड़पण तै बाळक उसतै डरया करदे जिस कारण वो उनमैं डर का दूसरा नाम बण्या होया था।

जिस दिन का जिक्र मनै कहाणी के शुरु मैं कर्या बस उसे दिन तक उस चरित्र की दहशत म्हारे दिलां मैं थी। उसकी मौत की खबर तै उस दहशत नै दुख का रूप ले लिया। मरण तै पहलां वो तीन–चार महीने तै बिमार चाल रह्या था। कुछ दिन पहल्यां तो उसकी हालत इतनी बिगड़गी थी अक खाट तै बी दूसरे लोग–ए पकड़ कै उठाया करदे अर लिटाया करदे।

उन्हीं दिनों हमनै पहली बार अपणी उस बखत तक की उस छोटी सी जिंदगी मैं ताऊ के घरां उसकी तीनों छोरियां अर होर रिश्तेदार कट्ठे होए देखे थे। जद तै ताऊ बिमार होया था तो बगड़ के बाळक उसकी गैर हाजरी मैं खुश होकै बेधड़क फिरनी पै अर उसके बाड़े मैं खेल्या करदे। उस खेल मैं बी ताऊ की याद तो सबनै आंदी पर वो हमनै इस तरियां छोडज़ैगा यू कदे सोच्या बी कोन्या था।

उसकी मौत की खबर सुणदे सार मैं अंदर तै बुरी तरियां टूटग्या। अपणी पुराणी यादां के तार खंगालदा मैं बेरा ना कद गाम मैं पौहंचग्या अर अपणी कताबां का झोळा मां के संदूक पै फैंक–कै चाल पड्या ताऊ पजाबे के घर कान्ही। ओठै का नजारा बी बहुत अजीब सा था। गाम के बड़े लोग तो ओठै मौजूद थे पर साथ मैं वैं सारे बाळक शोक मैं डूब्बे बेठे थे जो कदे पीठ पीछै ताऊ नै गाळ दिया करदे।

उसकी मौत का दुख बेरा ना बाकी लोगां नै तो कितना होगा पर हम बाळकां नै उसकी मौत का सदमा कहीं घणा था। हम सारे बाळक ताऊ की अंतिम यात्रा मैं शामिल होए अनमने मन तै अपणे-अपणे घरां ने मुड़ आऐ। आज बाळकां के जीवन का एक सफा बंद हो लिया था। उसतै पाच्छै बाळक बी रहे अर खेल बी होंदे रहे पर वो आकर्षण खेल मैं ना रह्या। इब किसे नै इंतजार ना रह्या करदा अक कद ताऊ पजाबा आवैगा अर सबनै खेल बीच मैं छोड़कै भाजणा पड़ैगा। उस बचपन नै पार करदे होए बेरा ना कद हम जवान होगे अर गाम तै बाहर की दुनिया तक जा लिकड़े। आज बेशक कई साथी गाम तै कुछ जुड़े होए हैं अर कुछ टूट चुके, पर गाम की उस माट्टी गेल जे कोए चीज़ गाम के बचपन कान्ही नै खींचे है तो वैं हैं ताऊ पजाबे की यादां जो कदे शायद जेहन तै ना मिटैंगी।

****

****

रिश्त्यां की आग

अक्तूबर के महीने का दिन था, दोपहर मैं धूप तेज हो चुकी थी। कोई दो बजे का बख्त होगा जद गाम के लोग अपणा खाणा खा कै आराम कर रहे थे। ठीक उसे बख्त गाम तै दूर दक्खण ओड़ तै आग की ऊंची–ऊंची लपटां उठणी शुरू होई। सारा गाम बाहर नै लिकड़ पड़्या। किसे नै बाल्टी उठाई अर किसे नै तासळा। कोए आपणे ट्रैक्टर नै लेकै भाज पड़्या तो कोए साईकल, स्कूटर अर मोटरसाईकल लेकै भाज्या।

आग गाम तै डेढ़–दो किलोमीटर दूर एक दम कटण नै त्यार खड़े गन्ने के खेतां मैं लागी होई दिखाई दे रही थी। तकरीबन 15 मिनट मैं लोग खेत तक पौंचगे। सारे लोग आग पै काबू पाण के तरीके सोच ही रहे थे के उसे बख़त एक थकी होई सी बूढ़ी आवाज सुणाई दी–

"क्यूँ आए हो उरै? किसे नै बी जे मेरी आग नै बुझाण की कोशिश करी तो मेरे तै बुरा कोए ना होगा।"

गाम आळे जद उस आवाज कान्ही गए तो देख्या अक गाम का इज्जतदार माणस नरंजण प्रकाश आपणे नौकरां नै लेकै उन कान्ही चाल्या आ रह्या था। गाम के नंबरदार नै भाज कै उसतीं पकड्या।

नंबरदार बोल्या, "के बात है नरंजण, ठीक बी है? मनै लागै आग नै बेकाबू होंदी देखकै इसका दिमाग डिगग्या। गाम आळ्यों, जल्दी तै आग पै पानी गेरो, नहीं तो या सारे गन्ने नै जला कै राख कर देगी।"

नारंजण एक दम चिंघाड़्या, "नहीं, कोई आगै नहीं आवैगा। पागल मैं नहीं, थम लोग होगे हो जो मेरे एक बार रोकण पै बी नहीं मान रहे। जद मालक मैं हूँ अर मैं ही थमनै रोक रह्या हूँ, तो यू कौण है थमनै कहण आळा।"

“बचने, तू जा अर देख अक जैपाल के गन्ने कान्ही आग ना जावै। उसनै रोकदे होए आपणे गन्ने की ओड़ नै बढ़ण देओ। अरै किरणु, तू दलजीत के गन्ने की ओड़ तै पात्ती नै हटा दे, ताके म्हारी आग किसे होर नै नुकसान ना करै।”

नौकर बोल्या, “पर चौधरी साहब, आप आग नै बुझावण क्यूं नी देन्दे ?”

नारंजण बोल्या, “मैं थमनै नौकरी पूछण की कोनी देंदा, समझे। जाओ अर जो कह्या गया है, उसनै करो।”

इतना कह कै चौधरी आग्गे नै बढ़ कै आग का जायजा लेण लागग्या।

गाम आले अचंभे भरी नजरां तै उसनै देख रहे थे। किसे की बी हिम्मत नहीं हो री थी अक आगै बढ़ कै आग नै रोकण की कोशिश करै।

कितना खतरनाक नजारा था! सडक़ पै चल रहे राहगीर भी रुक-रुक कै इस नजारे नै देख रहे थे। कोए शेरदिल ही होगा जिसका कालजा इस खौफनाक मंजर नै देख कै ना दहल्या हो।

सैंकड़ों- हजारों की तादाद मैं लोग कट्ठे होण के बाद भी सारे असहाय महसूस कर रहे थे। आखर मैं काफी देर रुकण के बाद सब नै वापस अपणे-आपणे घर जाना शुरू कर दिया। सांझ तक 20 किल्ले गन्ना जळकै खाक हो लिया था। नरंजण पूरी आग बुझण के बाद अपणे घर नै आया।

घर मैं घर आळी थी, धी-दोहते थे, पर पूत-बहू नहीं थे। बस यूहे दुख था जिसतै दुखी होकै नरंजण चौधरी नै आज यू कदम उठाणा पड़्या। हालांके उसनै बेटा होण का कदे गम ना करया था। बेटियां नै बेटयां तै बढ़कै मानै था यू चौधरी। कदे किसे चीज मैं कोए फर्क ना करया। तीनों बेटियाँ के ब्याह बड़ी धूम धाम तै करे। अच्छे घर-बार टोहे, अर अच्छे जमाई भी टोहण की पूरी कोशिश करी, पर उरै-ए मार खाग्या नरंजण सिंह चौधरी।

बड़े भागां तै बड़ा जमाई खूब पढ्या-लिख्या मिल्या। अच्छा घर बार अर अच्छी नौकरी थी। नरंजण सिंह घणा खुश रहण लाग्या। उस्तै पाछै वाहे छोरी अपनी दो छोटी बाहणां नै अपनी फुफस के छोरयां कै लेण आई। मिलदी-जुलदी रिश्तेदारी देख कै नरंजण नै देर ना करी अर रिश्ते पक्के कर दिये। छः महीने पाछै दोनुं छोरियां का ब्याह भी एक मंढे पै कर दिया।

बिचली छोरी का गौणा उसे बख़्त कर दिया गया अर छोटी की उम्र कम होण करकै फेरा पाण के पाछै उसतीं सासरे मैं ना भेज्या गया। संपन्न परिवार था सो छोटी छोरी तीं स्कूल जाण का मौका मिलदा रह्या अर वा दसवीं जमात पास करगी। उसे बख़्त छोटा जमाई बी शहर के कॉलज मैं पहुँच लिया था।

नरंजण के भाग मैं इसे घर तै दुख लिख राखे थे। बड़ी बेट्टी की सलाह पै इस परिवार तै रिश्ता तो जुड़ग्या, पर नां तो परिवार बराबर का मिल्या अर ना जमाई गुणी मिले। इस परिवार मैं एक तीसरी बहू बी आ रही थी जिसके बाप कै आगै-पिछै कोए ना था। उसनै आपणे जमाई तीं आपणे घरां रख राख्या था। वो तीसरा भाई घणी अच्छी मौज मैं रह रह्या था। बस छोटे भाई पै या मौज बर्दाश्त नहीं होवै थी। एक तो उसका कॉलज मैं जाणा अर ऊपर तै बदमाश छोहरयां गेल यारी-दोस्ती। शाही खर्चे तो पैदा होगे पर घर तै कोई सहायता ना मिलदी। इस बात पै सोचदे होए उस नै आपणे बड़े भाई की तरियां सुसराड़ तै हिस्सा लेण का ख्याल आग्या।

छोटे जमाई नै अपने घर आल्यां तांईं फतुआ जारी कर दिया के उसका गौणा कर्या जावै। बड़ी छोरी के हाथ नरंजण धोरै पता भेज्या गया। उसनै तैयारी करकै छोरी का गौणा करण के गेल-ए आपणे दुखां की नीम बी धरली। जमाई नै पता भिजवादिया अक एक मोटरसाईकल बी जरूर दी जावै। हालांके नरंजण के खातर मोटरसाईकल कोई बड़ी चीज नां थी, पर उसनै दोनू बड़ी छोरियां तै कोनी दी थी, सो चिंता हो रही थी।

गौणे करकै दोनुं बड़ी छोरियां बी घर आई होई थी। जद नरंजण नै आपणी चिंता उन के आगै सुणाई तो दोनु छोरियां नै बाब्बू तीं दिलासा देंदे होए कह्या अक कोए बात नी बाब्बू, या म्हारी छोटी बेबे है। इसकी खुशी मैं हम अड़ंगा नहीं करदे। तू खुल्ले दिल तै इसका गौणा कर। बाब्बू नै सांस सा आग्या अर एक बुलेट मोटरसाईकल बी गौणे मैं दे दी।

जिस रिश्ते की नींव ही लालच पै धरी गई हो औड़ै भावनाओं की कोई जग्हां नहीं होया करदी। यू रिश्ता बी कुछ इसे तरियां का था। असल मैं नरंजण की बड़ी बेट्टी नै बेरा ना था अक उसकी फुफस जमीन के लालच मैं उसकी छोटी बाहणां के रिश्ते लेण आई थी। ये रिश्ते तो दो तिहाई जमीन के लालच की नींव पै पैदा होए थे। चौधरी नरंजण अर उसकी बेटियां न्यू सोच रही थी अक रिश्तेदारी मैं रिश्ते करके घणा ठीक रहवैगा, पर उरै तो सारा उलट फेर होग्या।

कुछ दिनां पाछै छोटी छोरी घरां आई अर अपणी बिथा सुनाण लागी। उसनै बताया अक उसका पति इब रोज शराब पी कै बी आण लागग्या अर मोटरर्साइकल के तेल खातर पिस्से बी उसे पै तै मांगै है। घरां तै उसनै कोए कुछ ना देंदा बल्कि कॉलेज की फीस तक बी उसनै अपने धोरै धरे रपईयां तै दी है। इब उस धोरै बी पिस्से नहीं रहे तो अपणे बाप पै तै ल्याण की बात कह कै उसनै रोज पिट्टण बी लागग्या। या कहाणी सुणकै नरंजण मैं छोह तो घणा उठ्या, पर बेट्टी की खुशी अर घर टूटण तै बचाण खातर पाँच हजार रपईये दे दिये। छोरी अपने सासरे नै चली गई।

बस उरे तै चाल्या यू सिलसिला बढदा चाल्या गया। नरंजण पिस्से देंदा रह्या अर जमाई राजा ऐश करदा रह्या। जद खर्च, ऐश, नशा अर जनून घणा बढ़ग्या तो जमाई राजा की नज़र सुसरे की जमीन पै आ टिकी। शुरू मैं तो महीने मैं एक चक्कर होंदा पर फेर हफ्ते मैं एक चक्कर सुसरे धोरै लागण लाग्या।

कदे नरंजण की छोरी साथ मैं होंदी तो कदे जमाई राजा के नशेड़ी यार दोस्त। 5–7 साल मैं नौबात या आई अक उसनै आपणे भाई अर मामे के छोरे तै बात करकै आपणे सुसरे तै जमीन बाँटण नै कह दिया। नरंजण कै या बात घणी चुभगी। वो कुछ ना बोल्या। तड़के उठकै नाश्ता–पाणी करकै जद जमाई नै चालण खातर मोटरसाईकल उठाई तो सुसरे तै रात की बात के बारे मैं याद दिलाण लाग्या।

नरंजण बोल्या, कोई बात नी बेट्टा, मैं आपणे रिश्तेदारां अर भाईचारे तै बैठ कै बात करूंगा अर साढ़ के महीने तै पहल्यां इस बात नै सिरे चढ़ाऊंगा।

अगले दिन नरंजण पटवारखाने मैं गया। उड़े तै फर्द ले कै तहसीलदार धोरै जा पौहंच्या। घरां आकै उसनै रात भर नींद ना आई। अगले दिन नाश्ता–पाणी ले कै वो आपणी घर आली तै बतळाया अर फेर झोला ठाकै तीरथ यात्रा पै चाल्या गया। पांच दिन पाछै घरां वापिस आकै उसनै अपनी तीनों छोरियां बुला लई। उस रात सारे नौकरां की रोट्टी बी उसनै आपणे घरां–ए करवाई। अगले दिन दोपहर नै नरंजण नै सारे नौकर कट्ठे करे अर खेत मैं लेग्या। जांदे सार–ए गन्ने मैं आग लगा दी अर नौकरां तै हिदायत दे दी अक होर किसे के गन्ने मैं आग लगै ना अर उसका बचै ना।

गन्ने के 20 किल्ले फूँक कै नरंजण घरां आया अर अपनी घर आळी तै बोल्या के आज रात की ट्रेन तै हरिद्वार जाणा सै। छोरियां नै घर की जिम्मेवारी सौंप कै दोनू जी हरिद्वार नै डिगरगे।

टेशन पै बेठे–बेठे चौधरण बोली, “भतेरी के बाबू, थमनै जो यू कर्या सै, उसनै दुनिया ठीक बी मानैगी ?”

चौधरी बोल्या, “भागवान! या सब भगवान की मर्जी सै। जो उसनै रच रख्या सै वोही होवै है। तू बस राम का नाम जप अर भगवान मैं ध्यान ला।”

अगले दिन दोपहर बाद नरंजण की हवेली मैं एक वकील अर डेरे के कुछ बाबे आए। उनके गेल गाम का सरपंच अर लंबड़दार बी था। वकील नै आपणे कागज खोलदे होए नरंजण की छोरियां तै बताया अक उनके बाब्बू नै पिछले हफ्ते ही अपनी सारी जमीन इस डेरे के नाम कर दी है। घर की वशीयत मैं बड़ी दोनुं छोरियां का बराबर का हिस्सा है अर छोट्टी छोरी के हिस्से मैं डांगरां आला घेर है। बाकी चीज तीनुआं मैं बराबर बंटैगी। चौधरी साहब खुद हरिद्वार मैं रह्वैंगे अर उनके आखरी टेम पै बी परिवार के किसे शख्स नै ओठै जाण की इजाजत ना है।

****
****

लेखक परिचय

पवन सोंटी

शिक्षाः- एम.ए. हिंदी
पत्रकारिता एवं जनसंचार में पीजी डिप्लोमा
एनटीसी ड्राफट्समैन मकैनिकल।

कार्यक्षेत्रः- स्वतंत्र पत्रकार व लेखक,
दैनिक हरिभूमि,गंगागुत्रा टाइम्स व पहली खबर सहित अनेकों राष्ट्रीय समाचार पत्रों में पत्रकारिता, दैनिक आवारा बादल में स्थानीय संपादक, हरियाणा राइजिंग व गोल्डन प्रहरी सहित कई पत्र-पत्रिकाओं में संपादकीय टीम में कार्य और दैनिक भास्कर सहित अनेकों साचार पत्रों में लेख व काव्य लेखन।
रॉयटर्स के उपक्रम आरएमएल में कोर्स्पोंडेंट के तौर पर कार्य।
दिल्ली प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय में कंटेंट राइटर, स्टूडियो इंचार्ज व सोशल मीडिया हैंडलर।
वर्तमान में दिल्ली विश्वविद्यालय में कंसल्टेंट (कंटेन्ट राइटिंग, ट्रांसलेशन एवं सोशल नेटवर्किंग)

पुस्तकें:- पीढ़ी दर पीढ़ी (अमेज़न किंडल पर ई-बुक)
बदलती हवाएँ (प्रकाशन की प्रक्रिया में)

सहलेखक: जाट समाज की अमर धरोहर-जाट धर्मशाला कुरुक्षेत्र
मूल लेखक: डॉ ओमपाल सिंह तुगानिया

लेखन सहयोग: श्री अनूप लाठर जी द्वारा लिखित पुस्तक नल दाई एंव श्री देवराज सिरोहीवाल द्वारा लिखित पुस्तक संस्कृति के प्रहरी-अनूप लाठर

स्थाई पता:-
गांव: सोंटी, डाकखाना लाडवा, जिला कुरुक्षेत्र, हरियाणा (136132)
दूरभाष:-9416191900,

E-mail% pawansonti@gmail-com

9 789354 578700